this, I demand that the defectors' government at Srinagar headed by G.M. Shah should be immediately dismissed and the Assembly is to be dissolved.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (Jadavpur) : What is the present rate ?

SHRI CHITTA BASU : You can bargain.

Election is to be held and they should recall the Government which is responsible for this reprehensible attack and assault of the parliamentary democracy. (*Interruptions*).

I think Dr. Farooq Abdullah had committed one sin and that sin is that he made himself a co-partner in the struggle for the restoration of democracy in our country. His only crime was that he began the struggle of fighting against the trend of authoritarianism in the country along with other left and democratic forces of our country. He did not play to the tune of Mrs. Indira Gandhi. That was his sin. But I know it was not a sin. By his participation in the democratic movement in the rest of the country the process of integration of the people of India with the people of Jammu and Kashmir has been further strengthened and it remains to be strengthened—it must be strengthened —and by the action you have taken, if you allow me to say, you have disrupted that process of integration. This is a dangerous thing. Therefore, I would only request you that in the interest of the nation's unity and integrity, in the interest of preservation of parliamentary democracy in our country, such reprehensible steps are to be halted and I have made certain demands which should be considered.

Incidentally, I want to say one thing. Some have raised the demand that Article 370 of the Constitution which provides special status to Jammu and Kashmir should be scrapped. I am in disagreement with that demend. As a matter of fact, that should be retained and preserved and that will strengthen the democratic forces, secular forces in Jammu and Kashmir, and that will be a bridge between the secular and democratic people of India and the secular and democratic forces of Jammu and Kashmir which is an integral part of India.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The House stands adjourned to meet at 2 p.m. The first speaker after Lunch will be Dr. Rajendra Kumari Bajpai.

12.59 hrs.

The Lok Sabha ajdurned for Lunch till Fourteen of the Clock.

The Lok Sabha re-assembled after Lunch at eight minutes past Fourteen of the Clock.

[Mr. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair.*]

DISCUSSION *RE.* RECENT DEVELOPMENTS IN JAMMU AND KASHMIR —(*CONTD.*)

डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी : (सीतापुर) माननीय उपाध्यक्ष जी, मेरे से पहले माननीय सदस्य श्री चित्त बसु साहब कह रहे थे कि फारुक साहब की सरकार को जो बर्खास्त किया गया, वह संविधान के अनुसार नहीं है और गर्वनर साहब ने संविधान के अनुरूप काम नहीं किया। मैं समझती हूं हमारे प्रजातंत्र में, हमारे देश में, ऐसी स्थिति एक बार नहीं बल्कि अनेकों बार और अनेक राज्यों में आई है। रुलिंग पार्टी के अल्पमत में आ जाने से ही गवर्नमैंट बदली है। यह जरूरी नहीं है कि उसके बाद तुरन्त ही गवर्नर रूल लागू किया जाय। दोनों तरह की मिसाल हमारे सामने मौजूद है। मैं, उत्तर प्रदेश से आती हूं। उत्तर प्रदेश की एक घटना आपके सामने रखना चाहती हूं। एक अप्रैल 1967 की बात है। हम सब असेम्बली में बैठे हुए थे। माननीय चौधरी

[डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी]

चरण सिंह, उस समय हमारी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख नेताओं में से थे। माननीय स्वर्गीय श्री चन्द्रभानु गुप्ता जी उस समय के हमारे मुख्य मंत्री थे, वे वहां बैठे हुए थे। चौधरी साहब सदन के अन्दर ही अपने 17 साथियों के साथ, इधर से उठकर दूसरी तरफ चले गए।

गुप्ता जी ने एक मिनट नहीं लगाया न इधर देखा, न उधर देखा और तुरन्त स्पीकर साहब के सामने खड़े होकर कहा कि अध्यक्ष जी, मैं अब आपसे प्रार्थना करता हूं कि सदन की प्रोसीडिंग्स बंद कर दी जाएं और मैं गवर्नर साहब से मिलने जा रहा हूं। उसके बाद वे सीधे उठ कर गवर्नर साहब के पास गए और उनको अपना इस्तीफा पेश कर दिया। इसको डैमोक्रेटिक प्रोसैस कहते हैं और यही आदर्श वे उपस्थित करना चाहते थे। जैसे ही उनकी पार्टी अल्पमत में आई, उन्होने कुर्सी पर बैठे रहना उचित नहीं समझा। उन्होंने ऐसा नहीं कहा कि कल को सदन की बैठक बुलाई जाएं उसमें शक्ति परीक्षण हो और वहां यह देखा जाए कि बहुमत किस के साथ है। यह आदर्श और रास्ता उस समय गुप्ता जी ने हमारे सामने रखा।

जब उस समय चौधरी चरण सिंहजी उधर चले गए तो प्रजातंत्र की हत्या नहीं हुई थी, लेकिन हमारे विरोधी दल में बैठे हुए भाई कहते हैं कि यह प्रजातंत्र के ऊपर बहुत बड़ ब्लो है, और इस कार्यवाही से प्रजातंत्र पर गहरा धक्का लगा है। आज वे जुलूस बना कर राष्ट्रपति के सामने जाते हैं।

अब मैं यहां आपको दूसरा उदाहरण देना चाहती हूं।

PROF. SAIFUDDIN SOZ (Baramulla): Does it mean that you salute defection ?

MR. DEPUTY-SPEAKER: Mr. Soz, your name is here. I will call you.

(*Interruptions*)

PROF. SAIFUDDIN SOZ: I want to understand.

MR. DEPUTTY-SPEAKER: It takes time for you to understand.

DR. RAJENDRA KUMARI BAJPAI: मैं केवल यही बताना चाहती हूं जैसा आपने कहा कि गवर्नर को चाहिए था कि वह इस बात का फैसला विधान सभा का सत्र बुला कर करते। हाउस के फ्लोर पर टैस्ट होना चाहिए था और उसके बाद ही गवर्नर साहब को डिसमिसल आर्डर करने थे।

दूसरा उदाहरण में आपको और देना चाहती हूं। जब उत्तर प्रदेश में हम लोग चौधरी चरण सिंह जी की कोलीशन मिनिस्ट्री में थे और हम मिनिस्टर्स की संख्या 28 हुआ करती थी। उस समय प्रीवि-पर्स के ईश्यू पर चौधरी चरण सिंह जी ने पार्टी के लोगों का साथ नहीं दिया, जिस कारण कांग्रेस सरकार को एक मत से हारना पड़ा। उसी समय हम मंत्री लोगों ने यह निर्णय कर लिया कि अब हम चौधरी चरण सिंह जी के साथ इस मामले पर नहीं रहेंगे। जिन्होंने यह वायदा किया था कि वे दिल्ली में तो श्रीमती इंदिरा गांधी का साथ देंगे और लखनऊ में हम लोगों का साथ देंगे। लेकिन उन्होंने अपने इस वायदे का उल्लंघन किया। इसी कारण हम लोगों ने उसी दिन अपना इस्तीफा कांग्रेस के प्रेजीडैंट को भिजवा दिया और हम लोग

एकत्रित रुप से गवर्नर साहब के पास गए। उस समय चौधरी साहब ने कहा कि हम तो मंत्रियों का डिसमिसल करेंगे। परन्तु ऐसे कोई चीफ मिनिस्टर को, जिसके साथ बहुमत नहीं रहरा है, हम मंत्रियों को डिसमिस करने का कोई अधिकार नहीं था, इसलिए वे हमें उस समय डिसमिस नहीं कर सकते थे। इसी कारण उनकी बात तब भी नहीं सुनी गई। इसलिए जो चीफ मिनिस्टर अल्पमत में हो जाता है, सांवैधानिक रूपसे हाउस को डिस्सौल्यूशन करने का उसे कोई अधिकार नहीं रहता इसलिए जम्मू और कश्मीर सरकार के साथ वहां के गवर्नर ने कोई गैर सांवैधानिक काम नहीं किया। फारुक सरकार अल्पमत में आ गई थी और इसी कारण उसको बखस्ति किया गया।

प्रो० सैफुद्दीन सोज : मेरी दरख्यास्त है कि आप पहले कांसटीटयूशन पढ़िये।

(व्यवधान)

डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी : आप पढ़ कर के बोलियेगा। जब कोई भी सरकार अलपमत में हो जाती है तो हमेशा यही होता है कि दूसरे चुने हुए लोग आल्टरनेटिव गवर्नमेंट बना सकते हैं। उसका चांस गवर्नर साहब देते हैं। इसीलिए ऐसा चांस जम्मू और कश्मीर में भी मिल सकता था, क्योंकि 12 वे लोग हो गए थे और कांग्रेस पार्टी के 26 मैम्बर्स तथा एक इंडीपैन्डैन्ट मेम्बर को मिलाकर वे सरकार बनाने में समर्थ हो गए थे, समक्ष हो गए थे, इसीलिए उनको सरकार बनाने के लिए निमंत्रण दिया गया। यह कोई नई बात नहीं है। हम लोगों में से किसी ने वहाँ की नई मिनिस्ट्री में ज्वाइन नहीं किया है, कांग्रेस का कोई भी नेम्बर वहाँ मिनिस्टर नहीं है। हमने पावर के लिए भी ऐसा नहीं किया। जो सही बात है उसको सुनना चाहिए यह भी डेमाक्रेसी है। कश्मीर में यह कोई नई चीज नहीं है जिस समय सैयद मीर कासिम मुख्य मंत्री थे.....

प्रो० मधु दंडवते (राजापुर) : माननीया बाजपेयी जी, अगर आपकी इजाजत हो तो आपके उत्तर प्रदेश का एक और उदाहरण देता हूं। आचार्य नरेन्द्र देव और उनके साथी 1948 में जब कांग्रेस पार्टी से अलग हो गये तो सारे लोगों ने असेम्बली पद से इस्तीफा दे दिया था और चुनाव लड़े। सारे के सारे असफल रहे, लेकिन वह इस सिद्धान्त के लिये लड़ते रहे।

प्रो० के० के० तिवारी (बक्सर) : माननीय दंडवते जी, आप माननीय जार्ज फर्नान्डीस से पूछें कि एक दिन पहले तक तो मोरार जी भाई का सपोर्ट करते रहे और दूसरे दिन चौधरी चरण सिंह के लोक दल के साथ मिल कर सरकार बना ली।

डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी : मैं उस बात को कह रही हूं कि जो नेता लोग आज डिफैक्शन की बात कर रहें हैं और कहते हैं कि कश्मीर में डैमोक्रेसी की हत्या की गई है, मैं उनका जबाब दे रही हूं। जो डिफैक्शन की बात कहते हैं और उसी के बल पर जीवित हैं और जिसके गल पर उनकी जिन्दगी की अभिलाषा पूरी हुई, वह हमें उपदेश दे रहे हैं।

कश्मीर में जब सैयद मीर कासिम की सरकार थी और देश के हित में हमने उचित समझा तो 1975 में हमने शेखसाहब को अपनी पूरी सरकार देकर कहा कि आप सरकार चलायें और सैयद मीर कासिम

[डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी]

ने रिजाइन किया। तो कांग्रेस ने सदा देश हित, कम्युनल हारमनी के इंटरेस्ट में त्याग और बलिदान का रास्ता दिखाया है। पावर से चिपके रहना कांग्रेस ने नहीं सिखाया। और यही इस बार हुआ है कि हमारे लोग कश्मीर मिनिस्ट्री में नहीं शामिल हुए हैं। चौधरी साहब कहते हैं कि डेमोक्रेसी को बड़ा भारी ब्लो लगा है। चौधरी साहब जब देश के प्रधान मंत्री बने तो क्या उनके साथ बहुमत था ? वह भी अल्पमत थे। दूसरे की मदद से वह प्रधान मंत्री बने रहे। बाहर मदद करने वाले लोगों ने जब हाथ खींच लिया तो 6 महीने से ज्यादा एक दिन भी प्रधान मंत्री होकर, इस सदन के लीडर होकर नहीं आ सके। तो उस समय उनको नहीं सुझाथा कि सदन में उनका बहुमत है कि नहीं ? उस समय तो उनको फिक्र थी कि उनकी जिन्दगी की अभिलाषा पूरी हो रही है, वह प्रधान मंत्री बन रहे हैं चाहें उनके साथ बहुमत हो या नहीं।

आज क्या हो रहा है कर्नाटक में वहां श्री हेगड़े की सरकार है बाहर रहकर बी० जे० पी० सहायता कर रही है। अल्पमत की उनकी सरकार है। हर स्टेट में जहां जिसको जो सहूलियत होती है उसके हिसाब से लोग काम करते हैं। हर एक राजनीतिक दल अपनी क्वनीनियेंस का ख्याल करके चल रहा है, और हमें नैतिकता की शिक्षा दी जा रही है। वह लोग जो खुद नैतिकता से बहुत दूर जा कर देश की राजनीति चला रहें हैं, वह हमें शिक्षा देते हैं। जिसके लिए वकालत कर रहे हैं विरोधीं दलों के नेतागण, में पूछना चाहती हूं ? जिसके लिए आप बात करने जा रहे है उन्होंने कश्मीर के अन्दर अराष्ट्रीय तत्वों से हाथ मिलाया। आप उनकी वकालत कर रहे है ? वह कह रहे है कि यह गलत हुआ है। मैं तो कहना चाहती हूं कि आज उनका आपस में डिवीजन हुआ है।

श्रीमती प्रमिला दंडवते (बम्बई-उत्तर-मध्य) : चुनाव के पहले आप उनके साथ समझौता कर रहे थे। चूंकि ब्रेक हो गया समझौता इसलिए उसको गिरा रहे हैं, यह दुनिया जानती है।

डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी : हमारी बहन को मालूम नहीं है इसलिए ज्यादा क्रोध में बोल रही हैं हमने कभी उनके साथ समझौता नहीं किया, आप उस समय के अखबार और स्टेटमेंट देखिये। फारुक अब्दुल्ला ने जो कुछ कहा अपनी तरफ से कहा···मैं तो काश्मीर की इन-चार्ज जेनेरेल सेक्रेटरी हूं। मैं जानती हूं हर बात को—उस समय की भी बात को कि हम लोगों ने अपनी तरफ से कोई बात नहीं की, स्वयं उन्होंने अपनी तरफ से कहा। **(व्यवधान)**

प्रो० सैफुद्दीन सोज़ : क्या राजीव जी मौलवी फ़ारूक़ के घर नहीं गए ?

پروفیسر سیف الدین سوز: کیا راجیو جی مولوی
فاروق کے گھر نہیں گئے -

डा० राजेन्द्रकुमारी वाजपेयी : नहीं। **(व्यवधान)**

आचार्य भगवान देव (अजमेर) : उपाध्यक्ष महोदय, इनको रोकिए, नहीं तो इनको भी बोलने नहीं दिया जाएगा। **(व्यवधान)**

डा० राजेन्द्रकुमारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, आज हमारे सम्मानित नेतागण कुछ बातों को लेकर कह रहे हैं कि काश्मीर में ऐसा हो गया, वैसा हो गया और यह अन्याय है, वह अन्याय है। मैं

कहना चाहती हूं कि जब काश्मीर का हमारे देश के साथ मर्जर हुआ और काश्मीर हमारे देश का अभिन्न अंग बना, उस वक्त भी मौलवी फारूक.....

प्रो० सैफुद्दीन सोज : किस पार्टी ने यह इलहाक, एक्सेशन, कराया था ?

پروفیسر سیف الدین سوز : کس پارٹی نے یہ الحاق ایکسیشن کرایا تھا ۔

MR. DEPUTY-SPEAKER : We must know the facts from all sides. We must be tolerant. The others are tolerant when you speak. Why has a discussion been allowed ? Let us try to know all the facts.

डा० राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी : उस समय काश्मीर के जनप्रिय नेता स्वर्गीय शेख अब्दुल्ला थे, जो महान देशभक्त थे । उन्होंने काश्मीर को देश के साथ मिलाया और काश्मीर भारत का एक अंग हुआ, लेकिन काश्मीर में उस वक्त भी मौलवी फारूक थे, जिनकी उस समय मुस्लिम कांफरेंस थी, जो बाद में अवामी लीग बनी । उन्होंने दिल से इस बात को कुबूल नहीं किया था और इसलिए उनकी कार्य-वाहियां चली आ रही थीं । काश्मीर हमारी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है, जहां हमेशा सैकुलर दृष्टिकोण रहा है, वहां यह पार्टी है, जिसका वही हरा झंडा है, जो मुस्लिम लीग के कम्युनल सिद्धान्तों को मानने वाली है, जो साम्प्रदायिक तत्वों को लेकर कम्युनल काम और बातें करने वाली है । शेख साहब ने करीब पचास वर्ष तक कभी उसको स्वीकार नहीं किया था । जब तक शेख साहब जीवित रहे, उन्होंने कभी भी मौलवी साहब के साथ किसी तरह का समझौता नहीं किया, सैद्धान्तिक समझौता नहीं किया । ऐसी स्थिति थी कि दोनों में एक तरह से बोल-चाल भी नहीं थी । शेख साहब कट्टर नैशनलिस्ट थे और इन बातों को पसन्द नहीं करते थे ।

काश्मीर के इलैक्शन में क्या हुआ ? जब मैं काश्मीर वैली में गई, तो मैंने देखा कि नैशनल कांफरेंस के लाल झन्डे के साथ-साथ मौलवी फारूक का जो हरा झंडा है, जिसमें चांद और सितारे बने हुए हैं, जिसको एक बार कोई देखे, तो समझे कि पाकिस्तान का झंडा है, वे दोनों एक-साथ सिले हुए थे और वे हर जगह लगे हुए थे ।

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : You can interrupt only if the yields.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : I am not raising any controversy. There is a difference between the Pakistani flag and a religious flag.

मजहबी झंडे और पाकिस्तानी झंडे में फर्क है ।

مذہبی جھنڈے اور پاکستانی جھنڈے میں فرق ہے ۔

MR. DEPUTY-SPEAKER : You can repudiate all these things when your turn comes. Let us have an orderly discussion.

डा० राजेन्द्रकुमारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, मैंने कहा है कि देखने में ऐसा लगता है हरा झंडा और उसमें चाँद सितारा बना हुआ, मानो कि वह पाकिस्तानी झण्डे की तरह हो । वह देखने में ऐसा लगता था । उस में थोड़ा बहुत तो फर्क हो सकता है कि उसमें बिन्दियां इधर हों या उधर हों या चांद दूसरी तरह का बना हो, यह सब तो हो सकता है, लेकिन वह फहरा रहा था दोनों तरफ । तो जहां पर कि शेख साहब ने कभी ऐसे एलीमेंट्स के, ऐसे साम्प्रदायिक तत्वों और शक्तियों के साथ हाथ नहीं मिलाया, आज फारूक

[डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी]

अब्दुल्ला ने अपने एलेक्शन में जीतने की दृष्टि से हर ऐसे सम्भव उपाय किये जिस से कि वह जीत कर वहां के चीफ मिनिस्टर बने रहें। तो यह यहां से काश्मीर वैली में जो जहर आना था वह आ गया जो कि इसके पहले नहीं था। यहीं से इसकी शुरूआत होती है। जब किसी गलत आदमी का साथ लिया जाता है तो फिर उसकी कीमत भी चुकानी पड़ती है। यही चीज फारूक अब्दुल्ला साहब के साथ भी हुई।

उनका इतिहास भी ऐसा है, जब वह पढ़ते थे और बाहर थे तब भी उनके कान्टैक्ट्स बाहर ऐसे लोगों के साथ हुए जो कि काश्मीर को अलग करने की बात सोचते या समझते थे कि भारत से उसको लिबरेट किया जाय या जो संस्थाएं बाहर काम कर रही थीं, इंग्लैंड में थीं उनसे वह मिलते रहे, उनका सम्पर्क उनसे रहा। अमान उल्ला खां जो कि काश्मीर लिबरेशन फ्रंट के लीडर थे और जो बाहर आपरेट करते थे उन सब लोगों के साथ इनका व्यक्तिगत सम्बन्ध रहा है। तो एकदम दिमागी तौर से वह बदल नहीं सकते थे। जब भारत आए और उनके हाथ में शक्ति आई तो उन्होंने उन लोगों के साथ अपना सम्पर्क रखा और यही कारण है कि जो जमाते इस्लामी और जमाते तुलवा है, जो कि उसका मिलिटेंट हिस्सा है, उनका लड़कों का यंग फोर्स है, उनको इन्होंने बढ़ावा देना शुरू किया। थोड़े ही समय में उनको बढ़ावा देना शुरू किया। वह बढ़ावा दिया तो फिर ये लोग वह नारे लगाने लगे जो काश्मीर वैली में पहले कभी नहीं सुने जाते थे। शेख साहब के वक्त में लोगों की हिम्मत नहीं हो सकती थी जिन नारों को लगाने की वह फारूक अब्दुल्ला के वक्त में लगाए गए।

हमें याद है कि जब एलेक्शन की मीटिंग्स हो रही थी, श्रीमती इन्दिरा गाँधी की आखीरी एलेक्शन की मीटिंग जब काश्मीर में हुई तो, हमें शर्म आती है यह कहने में सदन के सामने, लेकिन उस वक्त नेशनल कान्फ्रेंस के लोगों को कहिए, या मालूम नहीं उनके साथ मिले हुए जो लोग थे या उन्होंने जिन लोगों के द्वारा इस काम को करवाया था यह हम नहीं जानते लेकिन कुछ लोगों ने एक तरह से नंगे होकर के प्रदर्शन किया था और यह देश की सबसे बड़ी नेता के सामने हुआ। इतनी शर्मनाक तरह की बातें हो रही थीं। जो बोल रही हूं यह कोई गलत नहीं है, रिपोर्ट की बात कह रहा हूं, यह रिकार्ड की बात मैं कह रही हूं जो कहीं पर भी लोग समझ सकते हैं और जान सकते हैं। कितनी कारें हमारी उस दिन तोड़ी गई थीं जब कि वह निकल कर जा रहे थे ? उसके बाद क्या हुआ ? हर जगह जो मीटिंग होती थी उसमें ऐसा होता था। यह जो बीज पड़ा, आज कहते हैं आप कि नेशनल इन्टीग्रेशन हम तोड़ रहे हैं, जिसके लिए आप वकालत कर रहे हैं फारूक अब्दुल्ला की ? फारूक अब्दुल्ला ने क्या किया ? हर मीटिंग में यह कहा कि असम में तो मुसलमानों के साथ ऐसा हो गया, जम्मू में हिन्दुओं के वोट तो इनको मिलेंगे, मुसलमानों को इन्हें वोट नहीं करना चाहिए और इस तरह की तमाम बातें कहते रहे।

ये सारा चीजें शुरू हुई तो काश्मीर में कांग्रेस को हिन्दू बना करके और दूसरे लोगों को मुसलमान करके ऐसी चीजें शुरु की गई जिससे इस चेंज की जो शुरूआत हुई वह आगे चलकर बढ़ती गई। क्रिकेट मैच के वक्त अक्तूबर में जो नारे लगे,

वह आप जानते हैं। पहली बार इस तरह के नारे लगे। और भी जो घटनाएं धीरे-धीरे होती गई वह सबको मालूम हैं। मैं इसलिए इन बातों को कह रही हूं कि एक तरफ तो इनके आपस के झगड़े की वजह से नेशनल कान्फरेंस के अन्दर जो विभाजन हुआ उसकी वजह से ये दो हिस्सों में बंटे। अब उनके ही लोग थे, उनकी ही पार्टी के अन्दर विभाजन हुआ जिससे इनकी गवर्नमेंट गई। हम लोगों ने तो बाहर से सपोर्ट किया। लेकिन साथ-साथ जो एन्टी नेशनल फोर्सेज थीं, ये उनकी मदद कर रहे थे। पंजाब के जो एक्स्ट्रीमिस्ट्स थे, ये उनके कैम्प्स वहां लगा रहे थे। सभी जानते हैं—9 गुरमत कैम्प्स वहां पर हुए, जिनमें 6 जम्मू में लगे और 6 काश्मीर में लगे, आखरी कैम्प पुंछ में लगा और फारूक अब्दुल्ला जो भिण्डरां-वाले के साथ थे, वहां गए तथा नारे लगाये गये। वहां पर जो फायरिंग हुई, उसमें एक आदमी मारा गया, लेकिन उसकी रिपोर्ट भी नहीं लिखी गई। इस तरह से वह एक्स्ट्रीमिस्ट लोगों को बढ़ावा देते थे।

मैं उन दिनों अखबारों में पढ़ती थी कि फारुक अब्दुल्ला साहब गुरुद्वारों में बहुत ज्यादा जाने लगे हैं, आखिर इसके पीछे मामला क्या था ? धीरे-धीरे राज खुला कि गुरुद्वारों मे जाकर वह एक्स-ट्रीमिस्टस के साथ ताल्लुकात बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। जितनी बार वह भिंडरां वाले से मिले, हम लोगों के पास तस्वीरें हैं, उतनी बार हमेशा अकेले में मिले। भिंडरां वाला आमतौर पर जब भी किसी से मिलता था तोउसके अपने लोगों के साथ मिलता था, विरोधी दलों के बहुत से नेता जानते होंगे, वे भी जब भी उससे मिलने गए होंगे। उसके दूसरे साथी भी साथ देते थे, लेकिन इनके साथ वह अकेले में मिलता था। क्या बात थी, जो अकेले मिलता था ? जो कश्मीर का लिब्रेशन फ्रंट इंगलैंड में है, उन के नेता और पंजाब के एक्स्ट्रीमिस्ट्स के साथ उनकी सांठगांठ थी। पंजाब के स्वर्ण मन्दिर परिसर में जब आर्मी गई, उसके बाद काश्मीर में जो नारे लगाये गये, जिस तरह से डिमांस्ट्रेशन करवाया गया, उससे स्पष्ट है कि एन्टी नेशनल फोर्सेज को इतने दिनों से इनकी तरफ से बढ़ावा दिया जा रहा था जिससे वे ताकतें उभर कर सामने आ रही थीं। उनको बढ़ावा देने में फारुक अब्दुल्ला की गवर्नमेंट का बहुत बड़ा हाथ था।

आप मैच ही की बात को ही लीजिये इतनी बड़ी बात हुई, सबसे पहले तो उन की गवर्नमेन्ट ने किसी को अरेस्ट नहीं किया जब उनको यहां से कहा गया तो बहुत मुश्किल से एक-दो लोगों को अरेस्ट किया, लेकिन बाद में फिर छोड़ दिया गया। जहाँ तक देश की इन्टीग्रिटी ओर कम्यूनल हारमानी की बात है—शेख अब्दुल्ला साहब ने काश्मीर को एक सैकुलर स्टेट बनाया था, जिस पर हमारे देश को नाज था, गर्व था और आज भी हमें उन पर नाज और गर्व है, लेकिन डा० अब्दुल्ला ने जो किया, एक बार्डर स्टेट होने के नाते भी उसको बरदाश्त नहीं किया जा सकता। यूं तो, उपाध्यक्ष महोदय, यह इनकी आपस की बात हैं, इनकी अपनी पार्टी का विभाजन हुआ है, लेकिन वहां जो घटनायें हो रही थीं, उनको देखते हुए सारा राष्ट्र चिन्तित था। वहां पर ऐसा एन्टी नेशनल काम करने वाला मुख्य मंत्री हो और जहां पर इस तरह का काम हो रहा हो, क्या उस-को देखकर भी केन्द्रीय सरकार चुप बैठी रहती वहां पर जो कुछ हुआ है, उनकी अपनी पार्टी का इन्टरनल मामला था, लेकिन उसके बावजूद भी देश की पब्लिक

[डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी]

ओपीनियन वहाँ पर जो कुछ हुआ उसको देखते हुए महसूस करती थी कि वहां जो कुछ हो रहा था वह ठीक नहीं था, क्योंकि वहां की लीडरशिप देश को कमजोर कर रही थी।

...(व्यवधान)...

SHRI E. BALANANDAN (Mukundapuram) : Mr Deputy-Speaker, Sir, we are discussing here a very serious problem. My friends sitting on the other side may please kindly take note of the fact that the whole opposition jointly said that in Kashmir 'operation butchery of democracy' has taken place.

SOME HON. MEMBERS : Oh, no, no.

SHRI E. BALANANDAN : My friendy here are making fun of it. You think that you are having the monopoly of patriotism in the country and you hold that you are the only people who love the country, and the rest of the people in the Opposition do not know anything about patriotism, unity of country, etc. I do not know where this kind of thinking will lead to.

Let us apply some simple logic and exmine the issue. Just before elections in Kashmir, the Congress-I had discussions with Mr. Farooq Abdullah for coalition in the general elections. That did not take place. My hon. lady member said that everything has to be taken in a broader dimension. All righ. Now, I am saying this. The next day after the elections took place and the National Conference Party in Kashmir formed the Government, the very next day, that party became anti-national, and the Congress-I Party has cheeks to say that all the elections were rigged. they have even filed cases against 42 members of the National Conference, out of a total of 46, including those company of thirteen muskteers who have come to this side. Immediately these thirteen have become national, who were with Shri Farooq Abdullah and the National Conference till then.

PROF. MADHU DANDAVATE : I object to him Sir. He connot call them that. They were great "patriots."

SHRI E. BALANANDAN : We were patient enough to hear the arguments from the Ruling Party Benches, and our points should also be heard. If we are wrong, we are willing to be corrected. On July second, when these people, who were till then on the other side, came all of a sudden to this side, they became patriots. Till the other day they were all anti-national people. Things cannot be seem this way. This is my first submission.

Secondly, when the Ruling Party comes to the Opposition in any State, immediately all the conventions are flouted. When the Congress Party is in opposition, they go to the speaker's chamber and bully him and sit there. They will go to the Chief Minister's Office, take the chair and send the Chief Minister out. That is how the Congress-I as an Opposition Party functions in our country.

SHRI G. NARSIMHA REDDY (Adilabad) : He connot go on like this Sir. It is not parliamentry.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : He is not mentioning about the Parliament. You can express your views when you speak in your turn.

SHRI G. NARSIMHA REDDY : Will you allow him to make wrong allegations?

SHRI E. BALANANDAN : Then, the cry of uncertainty, a cry that law and order has gone astray and so many other things are raised. Well, I have no objection if Congress-I wants to change some Government in some State. Let them do it. But the Congress-I, as the Ruling Party in the centre, i.e. the Ministers should not

say any thing like that. In the Party meetings at Calcutta or Bombay or at some other meeting, our Prime Minister Smt. Indira Gandhi has told that the law and order in Kashmir is gone and therefore that Govenment should be dismissed. Two Ministers, Shri Gulam Nabi Azad and Shri Arif Mohammad Khan have gone from here to Kashmir to take stock of the situation. They gave a memo to the Rashtrapati saying that this Government may be dismissed. Allegtions are now being brought forward. So many other stories were told. So, I say that the Congress-(I) was out to create trouble in Kashmir. They wanted to see that the Government of Dr. Farooq Abdullah was sent out. (*Interruptions*) For that, they were trying to find *alibis*. As *alibis*, you may quote shoutins of slogans in favour of Pakistan. We do not support that kind of slogans.

I give you some information, Sir. During the Malappuram bye-elections in Kerala, one seethy Haji, MLA who is a Minister, spoke at five public meetings, in which after he finished the delivery of his speach, he asked the people to stand up and say : 'Pakistan Zindabad'. What happened ? Finally, the Bhartiya Janata Party took opjection to this, and submitted a memorandum to the Governor of Kerala saying that this kind of anti-national slogans were being raised in Kerala. What action did they take ? They have taken no action.

We are discussing this point of dismissal, Let us see how this operation was conducted. Mr. B.K. Nehru was Governor there. He was contacted by a few MLAs who wanted to change sides. He told them, appropriately, that the question of strength in the Assembly should be tested in the Assembly alone, not in the Governor's residence ; and that too, at midnight. It should be tested in the Assembly alone. That was the convention. He said : 'On this basis alone I can act.' Then, to smoothen this operation, the major step taken by the Government of India was to send Mr. Jagmohan as the Governor there. What did he do ? I am not going to narrate the whole story.

On 24th June, these 12 MLAs sent a letter to him saying that they were changing sides.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Drafted by whom ?

SHRI E. BALANANDAN : Drafted perhaps by himself ; I do not know. But at the same time, what is his duty ? The duty of the Governor is not to keep it in his pocket. It is only the Governor who has deviated. He should immediately inform the Chief Minister that he has got a letter in which 12 MLAs have said that they are not in that party. Whatever it is. But our great Governor did not say anything to the Chief Minister. He kept it in his pocket. He air-dashed to Delhi, and consulted people, and went back. (*Interruptions*)

This is the high drama of butchery of democracy : on the night of Ist, Mr. Shah and others came to the Governor's residence and gave this letter. Immediately, the Governor said : 'Don't talk. Sit there in a corner. I shall call you." This way, he kept them there in the vicinity of Governor's place, and on 2nd morning, he phoned up the Chief Minister of the State to come. At 7.30, he came. The Governor said : "This is the letter." A photo copy of it was given. "About 12 people have changed sides" Naturally, the Chief Minister said : "All right ; this has to be tested in the Assembly. I have to consult my colleagues ; and I shall send a reply." He went back, and then wrote back to him, saying two things, very important things. People who talk of so many things should tell us : "Has the Governar got the duty to obey the law of the land ?" He may be a Congress (I) man. He wants the party to be built up. I have no objection. But he has to do it according to law. What is the law ? (*Interruptions*) Or at least, he must show that he was acting according to law.

[Shri E. Balanandan]

Dr. Farooq Abdullah said : 'I may be given a chonce to test my strength in the Assembly. If not, you have to dissolve the Assembly and order early elections in the State." This was the letter written. As per the Constitution now in force in Kashmir, the Chief Minister's advice on this is final.

Another argument was made by the lady Member, viz. that the majority was not with him at that time. May I ask her : 'Tomorrow is the 31st. The Governor who was satisfied so much about the majority of those people, had his own doubts. Why is he saying that on month time was given to test the strength ? The fun of the matter is that 13-1=14 MLAs from the other side were taken and sworn in as Cabinet Ministers. Is it not corruption when we are against bribery and all kinds of other things ? We claim to be honest men and people who are in the House are honest : and the government is also supposed to maintain moral standard. Is it the moral standard ? In Kashmir, there were only 5-6 Cabinet Ministers. Now, when the Congress-I Government came, all the 14 are Cabinet Ministers.

After receiving a letter, the Governor contacted the Central Government and with their help, he had brought in reserve police from Madhya Pradesh and U.P. Till 3.30 Dr. Farooq Abdullah was the Chief Minister of J&K. He did not know about it. The reserve police came in early in the morning. Not only that, army had been alerted. Can it be done above the Chief Minister and the State Government ? You are respecting democracy and the Constitution of India. The Constitution does not say that this can be done by the Governor. If that is so, then why shoutd there be a State Government and the people of the State want to have their own Government ?

Friends on the other side talk about national unity and integrity of the country. They say that it has to be prescrved and protected. By all means, it has to be protected and preserved. But through whom are you going to do it ? The people of J&K wanted to have their own government. They have done it through adult franchise and brought in a majority government. They have also passed anti-defection law in Kashmir. As per the law, if anybody changes his side, he will have no voting right.

Mr. Jagmohan may be a big man. I do not dispute his quality, etc. But as State Governor, he has got no right to judge it ; he should have referred it to a court and found out whether the change of side was correct or not. How can he decide about it when there is a particular law ? Beyond that, how can he go ?

When an opposition government was installed in Kashmir, all of a sudden, they started raising an objection to destabilise the government ; and they had finally bought certain MLAs by giving them the status of a Minister and a lot of money. I do not know how much. If you act this way in one State in other States, the same thing may happen ; in many other States, this has become the order of the day. There is a recent case of Sikkim. Mr. Bhandari, who had a majority, had been dismissed. Then Mr. Gurung was brought in. Then next day, Mr. Bhandari came to Delhi with 15 MLAs and Mr. Gurung's government was dismissed. Now, the president's Rule is there. What do you mean by the Governor's rule ? Governor's rule means that the State Government's rule is practically handed over to the military. Now, Jammu and Kashmir is under special situation and military is there ; and the militarv is going to control the affairs over there. What has happened in Punjab ? If you don't want to take the people of country into confidence or the people of a State, then who will keep the unity and the integrity of the country ? This thing you have forgotten. So I want to say two or three things. The opposition parties met and demanded that Mr.

Jagmohan, Governor of J&K, who has conducted the operation 'muder democracy' has to be recalled and Mr. Shah has to be dismissed immediately and elections should be ordered. It is our advice. Congress Party should uuderstand the importance of these suggestions. Today, if you want to keep the integrity of the country intact, at least you keep intact democracy that we have adopted in this country.

Today you are talking of national unity. But what is taking place in the country ? You are against communalism Are you ? Congress Party is ruling in my State. They are in coalition with 13, 14 partins which are basad on community, caste and religion. But they are saying that they are against communalism. (*Interruptions*) These facts are unpalatable though as a nation unity has to be maintained. The Home Ministher has said that the unity of the country should be maintained. I join with him when he says that antinational forces have to be dealt with firmly. But I want him to have his heart searched and see whether the policies which they are following will lead to integrity and unity of the country. Therefore, I request the ruling Party to accept our suggestions. That is the only correct path for protecting democracy.

श्री जैनुल बशर (गाजीपुर) : उपाध्यक्ष जी, मैं अपने दो विरोधी दलों के नेताओं की बात बड़े गौर से सुन रहा था। मुझे अपनी सरकार से दूसरी शिकायत है। मैं, यहां पर जुलाई-14 के ब्लिट्ज की एक खबर के कुछ अंश पढ़ना चाहता हूं ।

> "This alliance between the Akali extremists and Kashmiri secessionists was not a sudden development. Both sides had been working for it since early 1983, and during his private talks with Bhindrawale in the Golden Temple, Farooq Abdullah, according to Intelligence source, promised all help and facilities he needed from the J&K Goverment.
>
> This is how, these sources say, nearly 100 sikh Students' Federation activists came to be employed in the State's Education Department, the "Dashmesh" regiment established a base in Nanakpura in Jammu and some Akali terrorists escaped to Pakistan via Jammu."

मैं गृह मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि यह जो खबर निकली है, क्या उनको इंटैलिजेंस सोर्सेज से यह पता चला था कि जम्मू-कश्मीर गवर्नमेंट की पंजाब के उग्रवादियों से कोईसांठ-गांठ थी ? कोई साँठ गांठ थी, कोई गठबंधन था और सिक्ख स्टूडैंटस फैडरेशन के 100 आदमियों को वहां के शिक्षा विभाग में नौकरियां दी गई थीं। कुछ लोग जम्मू और कश्मीर गवर्नमेंट की सहायता से पाकिस्तान भाग गए थे। अगर ये सारी बातें सही थीं तो उसी समय जम्मू और कश्मीर की सरकार को बर्खास्त क्यों नहीं किया गया ? उसी समय जम्मू और कश्मीर की सरकार के खिलाफ कार्यवाही क्यों नहीं की गई ?

14.55 hrs.

[SHRI R. S. SPARROW *in the Chair*]

सभापति जी, अभी हमारे मित्र बालानन्दन जी कह रहे थे कि कांग्रेस पार्टी के बम्बई और कलकत्ता अधिवेशनों में जम्मू और कश्मीर सरकार के खिलाफ बातें की गई। हम लोग जरूर जम्मू और कश्मीर सरकार के खिलाफ बात करते थे और कांग्रेस पार्टी हमेशा से सरकार का ध्यान इस तरफ दिलाती थी कि वहां एन्टी

[श्री जैनुल बशर]

नेशनल तत्वों की गतिविधियां बराबर बढ़ती जा रही हैं । ये बे-बुनियाद बातें नहीं थीं । उस समय भी सबको मालूम था और अब भी यह बात खुलकर सामने आ रही है कि जबसे जम्मू और कश्मीर में फारूख अब्दुल्ला की गवर्नमेंट आई है, तबसे वहां देशद्रोही शक्तियां ताकत पकड़ रही थीं।

यहां पर क्रिकेट मैच का जिक्र किया गया, वहां प्रो-पाकिस्तानी नारे लगे लेकिन वे नारे तब वहां लगे जबकि जम्मू और कश्मीर के मुख्यमंत्री वहां बैठे हुए थे और उनके साथ वहां के कुछ मंत्री भी थे। लेकिन उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हुई। कुछ लोगों को गिरफ्तार किया, महज दिखाने के लिए और बाद में उनको भी छोड़ दिया गया।

पंजाब के एक्ट्रीमिस्टस और भिण्डरां-वाले के साथ जम्मू और कश्मीर के चीफ मिनिस्टर की बराबर बातचीत होती रही। मैं समझता हूं कि हमारी इंटैलीजैंस इतनी कमजोर नहीं है कि उनके बीच क्या बात-चीत होती थी, उसका पता हमारी सरकार को न हो। सरकार को उन सारी डैवलपमैंटस का पता जरूर रहा होगा। ये गतिविधियां बराबर बढ़ती रहीं।

पंजाब के एक्स्ट्रीमिस्टस बराबर कश्मीर में जाकर पनाह लेते रहे और अपने को सुरक्षित रखते रहे । वहां ट्रेनिंग लेते रहे और कई ट्रेनिंग कैम्प वहां आयोजित किए गए। उसके बारे में इस सदन में भी सवाल उठाये गए और यहां होम मिनिस्टर साहब ने हमें बताया कि इतने-इतने कैम्प लगे। ...(व्यवधान...)जम्मू और कश्मीर की सरकार को भी लिखा गया कि उनके खिफाफ कार्यवाही करें। हमारे गृह मंत्री जम्मू-कश्मीर की सरकार को उनके विरूद्ध कार्यवाही करने के लिए लिखा गया परन्तु कई पत्र लिखे जाने के बाबजूद भी कोई कार्यवाही नहीं की गई। दो-चार आदमियों की जरूर धरपकड़ की गई, लेकिन उसके बाद उनको छोड़ दिया गया ।

वे सारी गतिविधियां चलती रहीं। हमारी सरकार की जानकारी में यह बात थी तो मेरी सरकार से यही शिकायत है कि फारूक अब्दुल्ला की सरकार को जरुरत से ज्यादा छूट क्यों दी गई। अगर यह छूट न दी गई होती, उसी समय जम्मू-कश्मीर की सरकार को बर्खास्त कर दिया गया होता तो शायद आज हम लोग जो सुन रहे हैं, उसके सुनने की नौबत न आती।

मैं सरकार की मन्शा को अच्छी तरह समझती हूं कि उसने ऐसा क्यों किया । क्यों कि जम्मू कश्मीर में बहुत दिनों के बाद साधारण स्थिति वापस आई थी। जम्मू और कश्मीर एक संवेदन-शील राज्य है और पीछे वहाँ जो कुछ हो चुका है, उससे हमारे सभी माननीय सदस्य अवगत हैं, बड़ी मुश्किल से वहाँ सामान्य और साधारण स्थिति को लाया जा सका था। ऊसके लिए कांग्रेस की सरकार को कुर्बानी देनी पड़ी थी। हमारे प्रधान मंत्री जी ने कांग्रेस की चुनी हुई सरकार को वहाँ हटाया था, जिसके नेता उस समय के मुख्य मंत्री सैयद मीर कासिम थे और उन को हटा कर शेख अब्दुल्ला को जम्मू और कश्मीर का मुख्य मंत्री बनाया गया। उस समय उनका एक मेम्बर भी जम्मू और कश्मीर असैम्बली में नहीं था। उसके बाब-जूद भी उनको वहाँ का मुख्य मंत्री बनाया गया, उनकी सरकार वहाँ बनी। केवल इस

की जा सके। कश्मीर में भी वैसी स्थिति हो जो हिन्दुस्तान के दूसरे राज्यों में है। इसमें कोई शक नहीं कि शेख साहब जब तक जीवित रहे, उन्होंने जम्मू और कश्मीर में सामान्य स्थिति बहाल रखी, अपने समय में जन्होंने देश-द्रोही तत्वों को दबाये रखा, उनको पनपने नहीं दिया। उस समय देश-द्रोही तत्वों की हिम्मत नहीं थी कि कश्मीर की सड़कों पर या श्रीनगर की सड़कों पर पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये जाएं। किसी की हिम्मत नहीं थी कि देश-द्रोह की बातें की जाएं। अब हमारे शेख साहब जीवित नहीं है। जब उनके बाद फारूक अब्दुल्ला साहब वहां के मुख्य मंत्री बने तो भी हम लोगों को कोई ऐतराज नहीं था। क्योंकि हमारी सरकार और हमारी पार्टी यह समझती थी कि वे भी शेख साहब के पद चिन्हों पर चलेंगे और जो सामान्य स्थिति उन्होंने कश्मीर में बना रखी थी, वे उसको कायम रखेंगे और उसमें और सुधार करेंगे। फारूक साहब हमारे साथ संसद के भी सदस्य रहे हैं और हम लोगों के साथ उनकी मुलाकात है हमें। ऐसा नहीं लगता था कि जब फारूक साहब जम्मू और कश्मीर जाएंगे, वहां के मुख्य मंत्री बनेंगे तो ऐसे लोगों के घेरे में पड़ जाएंगे, जो एन्टी नेशनल एलीमेंटस हैं मैं अपने कश्मीर के साथियों से पूछना चाहता हूं कि क्या यह बात सही नहीं है कि फारूक अब्दुल्ला ने उन लोगों के साथ दोस्ती की जिनको शेख अब्दुल्ला साहब ने कभी मुंह नहीं लगाया था।

प्रो० सैफुद्दीन सोज : आप गलत बोल रहे हैं।

श्री जैनुल बशर : मैं गलत नहीं, सही बोल रहा हूं। आप सही बोल लीजिएगा शेख साहब ने कभी ऐसे तत्वों से कोई ताल्लुक नहीं रखा था जो देश द्रोही या एन्टी नेशनल तत्व थे। शेख अब्दुल्लासाहब का उनसे कोई सारोकार नहीं था और वे उनको ठीक रखे हुए थे, दबाये हुए थे। लेकिन कश्मीर का दुर्भाग्य है और साथ ही इस देश का दुर्भाग्य है कि फारूक अब्दुल्ला साहब इन तत्वों के घेरे में आ गए, बल्कि मैं तो यहां तक कह सकता हूं कि उन तत्वों के राजनीतिक बन्दी बन गए थे, उनके राजनीतिक कैदी हो गए थे। मुझे फारूक साहब की नियत पर कोई एतबार नहीं है। लेकिन उन्होंने चुनाव के समय इन तत्वों से हाथ मिलाया, यह उनकी गलती थी। चुनावों के समय वे हमारे साथ मिलने की बात कर रहे थे ताकि चुनाव गठबन्धन किया जा सके। कांग्रेस ने भी चुनावों में नेशनल कान्फरैंस के साथ गठबन्धन करने की, कोशिश की, इसमें बुराई वाली कोई बात नहीं है। कांग्रेस और नेशनल कान्फरैंस मिलकर चुनाव लड़ सकते थे, क्योंकि दोनों राष्ट्रीय पार्टियां थी। उस समय नेशनल कान्फरैंस में अराष्ट्रीय तत्व शामिल नहीं थे। यदि दोनों पार्टियां मिलकर चुनाव लड़तीं तो उसमें कोई बुराई की बात नहीं थी। लेकिन फारुक अब्दुल्ला को उन्हीं तत्वों ने ऐसा नहीं करने दिया और वे उनके हाथों की कठपुतली बन कर रह गए, उनके मजबूर होकर रह गए। फारूक अब्दुल्ला यह समझने लगे कि जब तक इन तत्वों का साथ नहीं मिलेगा, वे चुनाव नहीं जीत सकते और आगे नहीं बढ़ सकते। शायद यही कारण था कि उन्होंने इन तत्वों को जरुरत से ज्यादा छूट दे दी और खुलकर

[श्री जैनुल बशर]

हमारे सामने आये । जिन दिनों वहाँ इलैक्शन हो रहे थे, तो श्रीनगर की सड़कों पर किस तरह भारत के खिलाफ बातें कही जा रही थीं, नारेबाजी की जा रही थी, किस तरह देश-द्रोह के चर्चे हो रहे थे, वह खुली बात है कोई ढ़की या छिपी बात नहीं है। उसको हमारे विरोधी दल नेता लोग भी जानते हैं, सारे देश की जनता जानती है और हम सभी लोगों को मालूम है कि उस समय जम्मू और कश्मीर में लोग क्या कह रहे थे, वे कौन से तत्व थे और कौन लोग थे जो इस तरह की हरकत कर रहे थे। मैं यहां किसी पर आक्षेप नहीं करना चाहता, सोज साहब के बारे में भी नहीं कहता, शेख अब्दुल्ला साहब को भी नहीं कहता या नेशनल कान्फरैंस के किसी नेता पर उंगली नही उठाता, लेकिन मेरी शिकायत है कि उन तत्वों के आपके साथ मिल जाने के कारण ही उनकी हिम्मत पड़ गई। क्या उनको यह हिम्मत पड़ गई कि वे देश-द्रोह की बातें करें। कि वह देश-द्रोह की बात करें, एंटी नैशनल बातें करें। चुनाव में जो कुछ हुआ सबके सामने है। चुनाव जीतने के बाद फारूक साहब उनके कैदी बन रहे हैं, कुछ भी नहीं कर सकते थे। मैं उनको दोषी नहीं ठहराता। लेकिन लोगों को शुबहा हो सकता है उनके पिछले इतिहास से, लन्दन में जो उन्होंने किया था उससे लोगों को शुबहा हो सकता है, पाकिस्तान में उन्होंने किस प्रकार का भाषण दिया था। जब लन्दन से कश्मीर में आते थे । तो क्या बातें करते थे। हम समझते थे फारूक साहब बदल गये वह शेख साहब के पद चिन्हों पर चलेंगे जिसकी उन्होंने कसम खाई थी । लेकिन बाद में साबित हुआ कि यह सब गलत था। वह शेख अब्दुल्ला के पद चिन्हों पर नही चल रहे थे। वह कश्मीर को दूसरी तरफ ले जाना चाहते थे।

जब पंजाब में उग्रवादियों का आतंक बढ़ा तो फारूक साहब की उनके साथ दिलचस्पी का क्या कारण था ? उनका बार-बार उनसे मिलना, उनसे बात करना, यह क्या इशारा करता है ? इससे क्या नतीजा निकाला जा सकता है ? सिवाय इसके कि वह इस गठबन्धन में जानबूझ कर या अनजाने में शामिल थे। उन्हें पता रहा हो या नहीं, लेकिन वह शामिल कर लिये गये थे। और इसके पीछे वही तत्व थे जिनका वह साथ किये हुए थे। उन तत्वों को उन्होंने खुली छूट दे रखी थी, बल्कि उन तत्वों के कहने पर वह काम करने लगे थे। और जो बात थी वह सामने आयी। मेरी तो सरकार से यही शिकायत है कि उस समय क्यों नहीं कश्मीर सरकार को बर्खास्त किया गया ? आपने बेहद छूट दी जनतंत्र के नाम पर। जब पंजाब में श्रीदरबारा सिंह की सरकार को, जो कि अपनी पार्टी की सरकार थी, बर्खास्त किया जा सकता है तो कश्मीर में छूट देने की क्या बात थी ? प्रधान मंत्री ने बहुत अधिक नर्मी दिखाई, जरूरत से ज्यादा। शायद इसलिये कि कश्मीर का एक स्पेशल स्टेटस है। बार-बार यहां से वहां गया कि फारूक साहब सम्भल जायें, जिस रास्ते पर चल रहे थे उससे वापस आ जायें। इसके बाद भी सरकार को हमने नहीं हटाया, सरकार ने डिसमिस नहीं किया। वह डिसमिस हो गए अपने झगड़े में और अपने घर के झगड़े में। यह तो एक फैमिली झगड़ा था। गुलाम मोहम्मद शाह उनके बहनोई हैं, खालिदा उ की बहन हैं, तारिक अब्दुल्ला उनके भाई हैं। और कुछ नेशनल कानफरेंस के मेम्बर्स इकट्ठे हो गये, उनके साथ मिल गये। आज से नहीं जब से गुलाम मोहम्मद शाह को मुख्य

मंत्री नहीं बनाया तब से वह इस ताक में थे कि नेशनल कानफरेंस की सरकार, या फारूक अब्दुल्ला को सरकार को गिराया जाय। और उसमें यह कामयाब हो गये। सरकार गिर गई इसमें हमारा क्या दोष हैं ? हम एक राजनीतिक पार्टी हैं, विरोधी दल में बैठते हैं। अगर हमको स्थिति अच्छी लगे जो लोग आये हैं दूसरी पार्टी से उनको हम समर्थन दें; तो जरूर देंगे। आखिर आपने भी तो यही किया है। अभी डा० राजेन्द कुमारी बाजपेयी बता रही थी 1967 में क्या हुआ ? 17 विधायक टूटकर कांग्रेस से चले गये और विरोधी दल के लोगों ने उनको सरकार बनाने के लिये समर्थन दिया। मध्य प्रदेश में गोविन्द नारायण सिंह ने भी यही किया, उनको भी विरोधी दल के लोगों ने समर्थन दिया। उनकी सरकार बनी, छोड़िये 1979 में जब पाटिल साहब महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री थे तो शरद पवार साहब ने क्या किया था ? वह कांग्रेस (एस) और कांग्रेस (आई) की मिली-जुली सरकार से अलग हो गए और जनता पार्टी ने उनका साथ दिया। एक नहीं अनेक ऐसी मिसाले हैं कि इन पार्टियों ने डिफेक्टर्ज, दल-बदलुओं, को सरकार बनाने में मदद दी और उन्होंने सरकार बनाई।

1979 में दिल्ली में पार्लियामेंट में क्या हुआ ? वह तो हाल की घटना है। श्री दंडवते उस समय मंत्री थे। उनको याद होगा। जनता पार्टी में पूरी तरह से फूट पड़ गई। श्री जार्ज फर्नान्डीज उस समय अविश्वास-प्रस्ताव के डिस्कशन में सरकार का बचाव कर रहे थे, मगर दूसरे दिन वह खुद जनता पार्टी को छोड़कर चले गए। काफी संख्या में सदस्य जनता पार्टी से अलग हो गए। श्री मोरार जी देसाई ने नैतिकता के आधार पर इस्तीफा दे दिया। जब कांग्रेस पार्टी ने चौधरी साहब को प्रधान मंत्री बनने में मदद दी, तो उसने कोई गलत काम नहीं किया। हमने देश-हित में जो ठीक समझा, वह किया। लेकिन श्री दंडवते एक बात को मानेंगे कि हमने उनकी सरकार नहीं गिराई थी, उसके लिए हमने डिफंक्शन्ज इंजीनियर नहीं किए थे। उनकी सरकार अपनी कमी की वजह से गिरी थी।

प्रो. मधु दंडवते (राजा पुर) : अपनी सरकार को गिराने की ताकत तो हम लोगों में भी थी।

श्री जैनुल बशर : उस ताकत का आपने पूरा-पूरा इस्तेमाल किया, उसमें आपने कोई कमी नहीं रहने दी।

उस समय हमारी राजनैतिक मंशा यह कहती थी कि हम उस सरकार का समर्थन करें और हमने उस सरकार का समर्थन किया। तो अब इस बात को बुरा क्यों कहा जा रहा है ? क्यों आज हमें दोष दिया जाता है कि हमने फारूक अब्दुल्ला की गवर्नमेंट को गिराया। हमने उनकी गवर्नमेंट नहीं गिराई। उनकी गवर्नमेंट को नैशनल कांफरेंस के कुछ लोगों ने मिल कर गिराया है ? हमने अपनी राजनीति और देश के हित में यह मुनासिब समझा कि हम श्री शाह को सरकार बनाने में समर्थन दें और हम उनको समर्थन दे रहे हैं। जब तक हम राष्ट्र-हित में जरूरी समझेंगे, तब तक हम उनको समर्थन देंगे और जब जरूरी नहीं समझेंगे, तब अपना

[श्री जैनुल बशर]

समर्थन वापस ले लेंगे। यह फैसला करना हमारा काम है कि हमारी स्ट्रेटेजी क्या हो और हम किस तरह से काम करें। दूसरे लोगों को इस बारे में सलाह देने की आवश्यकता नहीं है। कल अगर कर्नाटक में किन्हीं कारणों से सरकार गिर जाए, तब भी हमारे मित्र कहेंगे कि उसमें हमारा हाथ है। क्या हम कर्नाटक में कुछ कर रहे हैं ?

कल अगर हमारी सरकार हरियाणा या केरल में गिर जाए, तो विरोधी दल भी वही काम करेंगे। क्या वे यह काम नहीं करेंगे ? वे पहले भी यह काम कर चुके हैं और आगे भी करेंगे। तो फिर इसमें हमारा दोष कहां आ गया ? ये लोग बिला-वजह इस मसले पर एकजुट हुए हैं। श्री बालानन्दन ने कहा है कि सब विरोधी दल इस प्रश्न पर एकजुट हुए हैं। मैं कहना चाहता हूं कि यह कोई मसला नहीं है, यह मसला तय हो चुका है। बार-बार ऐसा हुआ है कि जहां जिस गवर्नर ने जो मुनासिब समझा है, वह फैसला किया है। कभी असेम्बली में स्ट्रेंग्थ का टेस्ट हुआ है और कभी बाहर हुआ है।

लेकिन एक खास बात के बारे में विरोधी दल बिल्कुल मौन हैं। उनकी निगाह सिर्फ एक ही पहलू की तरफ है। दूसरे पहलू की तरफ वे निगाह नहीं रख रहे हैं। काश्मीर में देशद्रोह की गतिविधियां हो रही थी और देशद्रोही ताकतें सिर उठा रही थीं। बहुत प्रयास और बड़ी मेहनत के बाद काश्मीर के वातावरण को ठीक किया गया था। अब उस वातावरण को दूषित करने का काम हो रहा है, मगर उसकी तरफ सामने बैठे हुए माननीय सदस्यों की निगाह नहीं जा रही है। देश-हित का तकाजा तो यह है कि उन्हें उसपर नजर रखनी चाहिए और सोचना चाहिए कि काश्मीर में क्या हो रहा है, पंजाब में क्या हो रहा है ? आज पंजाब और काश्मीर की स्थिति कैसी हो रही है, इस बारे में भी तो आप को सोचना चाहिए। बस, फारूक अब्दुल्ला की गवर्नमेंट चली गई और डेमोक्रेसी का मर्डर हो गया। कल को आप यह कर लें तो डेमोक्रेसी जिन्दा हो गयी और हम समर्थन कर दें तो डेमोक्रेसी मर गई, यह एक अच्छा ऐटीच्यूड विरोध का हमारी समझ से नहीं है। मैं यह समझता हूं कि जो भी काम काश्मीर में हुआ है वह जो नार्मल प्रैक्टिस इस देश में रही है उसी के हिसाब से हुआ है। इस में कांग्रेस पार्टी या सरकार का कोई कुसुर नहीं है। आज सरकार इस बात के लिए जवाबदेह हैं, गृह मंत्री जी इस बात के लिए जवाबदेह हैं और इस का उत्तर वह देंगे कि जो ऐन्टी नेशलन ऐक्टिविटीज काश्मीर में हो रही थीं जिसकी इत्तिला उनको मिल रही थी उसको देखते हुए उन्होंने काश्मीर की गवर्नमेंट को पहले ही क्यों बरखास्त नहीं किया, उसके खिलाफ पहले ही क्यों नहीं कार्यवाही की ?

———

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Call them "defectors".

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : Don't interrupt please. There is a limit.

प्रो० सैफुद्दीन सोज : डिफेक्टर्स को प्रेज करते हैं, शर्म नहीं आती है ।

आचार्य भगवान देव : सभापति जी, इन्होंने असंसदीय शब्द बोला है, इनका यहां बोलना मुश्किल हो जायेगा, आप इनको रोकिये ।

MR. CHAIRMAN (SHRI R.S. SPARROW) : Order Please.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : Why do you get excited my dear friend ? All of you put together allowed him to kill himself.

(Interruptions)

It is a very simple case. 13 of them fortified by a letter of the leader of the Congress-I which has a strength of 26 members—totalling 39 – were before the Governor. Along with a letter, 13 of them were before the Governor, Then, the Governor sent word to Dr. Farooq Abdullah, Here is a case where 13—12 of the National Conference and one independent—fortified by a letter of the leader of the Congress-(I) have said that they have lost confidence in the Chief Minister. Now, he was called. He went and met the Governor. He talked to him for quite a long time and he has later a replies to the Governor also. You mark it. In his reply to the Governor, he has said, you dissolve the Assembly or recommend Presidents rule or call the Assembly and all that. But he did not dispute the fact that 39 of them were against him and he has lost his majority.

My simple point is, when the Governor war confronted with 13 MLAs and the leader of the Congress-I with his 26 MLAs, he sent word to Mr. Farooq Abdullah. He came; he talked to him, maybe for quite a length of time, and he went home, consulted his friends, probably, consulted his lawyers also. Never did he say that the majority was with him. He only said, "You dissolve the Assembly; you call a fresh Assembly to test the strength." This is what he said. Therefore, where is the question of 'X' or 'Y' or 'Z'. Here is a simple case where the Chief Minister lost his majority and it was the bounden duty of the Governor to say, "You are out".

Now, supposing is Karnataka or in Andhra Pradesh, a situation like that arises.....

(Interruptions)

SHRI CHANDRAJIT YADAV (Azamgarh) : Why don't you say UP or Bihar ?

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (New Delhi) : Why Karnataka or Andhra Pradesh.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : All right. Because of Mr. Vajpayee's objection, I leave out Karnataka or Andhra Pradesh. I go to Bihar or U.P. Supposing a majority of legislators go and meet the Governor and say, "We have got a majority", what would he have done ? He would have done the same thing.

PROF. MADHU DANDAVATE : For God sake, don't become the Governor of any State with these views of yours.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : I do not think I will be given that trouble.

It is a simple point. If he had not acted as he did, I would have to say that he acted in contravention of his duty. Therefore, there is no question of a Chief Minister, after having lost majority, saying, "You dissolve the Assembly". Then, my God, no Government will last in the country for any length of time. Mr. Home Minister, you beware.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY (Narasaraopet) : In a very brief exposition of my Point of view, it is not my purpose and it will not be my purpose to irritate my friends who are sitting in the opposition, who in my opinion are formally shedding their tears for a friend who committed suicide. (cheers) This is an obvious case.

It is also in line with the remark just now made by Prof. Dandavate He said, "We in the Opposition have the capacity to destroy ourselves".

PROF. MADHU DANDAVATE : sense of humour.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : It is not my purpose to go into the Farooq Abdullah's life sketch which is not very attractive his student days, England days, how he went along with the pro-Pakistan element, etc. Neither do I want to go into details about the incidents which have been taking place ever since May 1983. There were many incidents. My good friend Dr. Rajendra Kumari Bajpai in her very pertinent and relevant speech said about all the anti-national, pro-Pakistan and Pro-Khalistan incidents that took place with Farooq's Convivance. It is relevent to show that friends in the Opposition who are very responsible, respectable people, when the interest of the nation is at stake, when a dangerous situation is trying to get out of hand and the nation's integrity, security and integrity is a matter of concern, they should adopt an attitude by which the entire country feels that in times of emergency, in times of crisis to the nation, all the parties irrespective of their differences act in concert. That is my point.

Execuse me, pardon me, this Dr. Farooq Abdullah seems to my mind a little unstable and also immature.

I am not trying to offend him. I am only trying to tell him that he is rather immature, in any case.

Now, coming to the main point, the Centre is not concerned. Why do you drag the Centre ?

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Would he become mature had he supported Congress ?

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : I don't know whether you would have become mature. You see, whether he supports me or you, it is his business. He may support you or he may support me. He may support 'X' or 'Y'. A man like him may support 100 different people in a year. Therefore, I am not bothered whom he supprted. I am also not bothered that he did not come to terms with the Congress-I. If he has entered into an agreement with another Opposition Party. I would have no objection but except with Maulvi Farooq whose stand all of you know.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Do you know that Shri Rajiv Gandhi went to Maulvi Farooq for a political settlement ? He visited his place.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : You reserve your exuberance to Kashmir area.

DR. RAJENDRA KUMARI BAJPAI : No. He did not visit his place.

(*Interruptions*)

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : In a simple matter like this, no temper need to be exhibited by anybody. It is a simple issue. Here is a case. My hon. friend Mr. Balanandan, of course, made a very half-hearted speech, I know. But all the same he said, it is butchery of democracy. I say, whoever may be the members of the lower House of Jammu and Kashmir but they have saved the Indian unity for the time being.

(*Interruptions*)

Therefore, we need not unnecessarily traverse other grounds. The question of Centre does not come. Here is a simple case where 12 members of the Legislature from the National Conference...

I will recall to your memory a case which happened in Madhya Pradesh which Mr. Satish Agarwal may be knowing. In 1968, Mr. D.P. Mishra lost his majority and he recommended to the Governor to dissolve the Assembly. The Governor did not dissolve the Assembly. The present Prime Minister was the Prime Minister then also. You had seen Mr. Govind Narain Singh forming the Government which was not a Congress Government.....

SHRI CHANDRAJIT YADAV : Do you remember Mr. L.K. Jha's case in Jammu and Kashmir itself where the Congress-I withdrew support with two members, Mr. Afzal Beg and Sheikh Sahib, and he recommended dissolution of the Assembly and Mr. L.K. Jha dissolved the Assembly and they went in for elections ?

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : I can dispute that fact. Mr. L.K. Jha is not a constitutional expert for me, nor a guru for me. You answer my point. Why you go to what Mr. L.K. Jha ? did ?

SHRI CHANDRAJIT YADAV : It happened in June or July, 1977. Mr. L. K. Jha was the Governor of Jammu and Kashmir State. It is the same State; the same thing happened there, when Assembly was dissolved in Chief Ministers recommendation.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : Here is a simple case of a Chief Minister having lost the majority....

SHRI SATISH AGARWAL (Jaipur) : Mr. Reddy, May I interrupt you ? I am not usually accustomed to interruption. You referred to me.

How is it that the Congress-I Party having withdrawn the support to Choudhuri Charan Singh, you as the Cabinet Minister you were a member of the Cabinet—recommended dissolution of the Lok Sabha to the President, Mr. Sanjiva Reddy, and the President dissolved the Lok Sabha ? You were a mamber of the Cabinet then. How did Mr. Sanjiva Reddy dissolve the Lok Sabha on the strength of the minority Government ?

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : I am not an advocate.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : That was a democratically formed Govern-ment.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : I am not advocate either for you or for Mr. Sanjiva Reddy or for Mr. Charan Singh. Do you understand ?

SHRI SATISH AGARWAL : Yes, I have got the answer.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : No, no. What he did was his own affair.

SHRI CHANDRAJIT YADAV : He is pleading a very weak case.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : It is the strongest case.

PROF MADHU DANDAVATE : It is a Cabinet decision. You remember you were a Member of the Charan Singh Cabinet. You forgot that you were a Member of the Charan Singh Cabinet.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : After you successfully committed suicide, there was some Government for some time.

MR. CHAIRMAN (SHRI R. S. SPARROW) Let us stick to the subject. Let us not involve ourselves in other matters. You kindly round it off now.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY : The second point mentioned is that he should dissolve the Assembly on his recommendation. When a Chief Minister loses his majority, he has no right to recommend dissolution of the Assembly. That is over.

[Shri K. Brahmanada Reddy]

The third point which is mentioned is "Why not you give time, allow the Assembly to meet, discuss and then pass a resolution either way ?" I say it is the most dangerous thing to do. To allow a man who has lost his majority to go to all kinds of people, to bribe all kinds of people, to indulge in all kinds of horse-trading, which you and all of us are against, that would have been the result in Jammu & Kashmir, if he had given time for The Assembly to meet.

Considering all these factors, this is a simple issue. We need not lose our tempers. The Governer was within his right and was doing his duty, if "If may say so, having dismissed Dr. Farooq and installed a Government which, I persume will be acting in consonance with the traditions of secularism and national unity.

MR, CHAIRMAN (SHRI R. S. SPARROW) : Now Shri George Fernandes will speak.

SHRI GEORGE FERNANDES (Muzafferpur) : Mr. Chairman, I would like to start by taking : strong exception to the statement which the hon. Minister of State for Home Affairs presented to the House of 26th instant.

You will recollect that on the day the House opened, we raised this question of Jammu Kashmir and you know what transpired in the House that day. The Speaker then promised a discussion. The Government side said that they would come with the statement and this is the statement which was presented to the House on 26th instant by the hon. Minister of State.

I want to take very strong exception to the statement because I believe that this statement amounts to almost contempt of the House. We had pleaded with the Hon. Speaker that we would like the Government to tell us what happened in Jammu & Kashmir that necessitated this change.

If we go through the statement, the dismissal of the Farooq Abdullah Government and the installation of a puppet Government, is dismissed in exactly one sentence in paragraph No. 5. It is stated therein :—

"In another development"

In other words, there were certain developments.

I will come to that later.

"In another development, the Governor of Jammu & Kashmir dismissed the Ministry headed by Dr. Farooq Abdullah on 2-7-1984 and swore in Shri G.M. Shah a Chief Minister to from a new Government under the provisions of the Constitution of the State of Jammu and Kashmir."

That is all. This House expected the Government to show it some respect.

Yesterday in the newspapers, we read about some white paper which this puppet Government in Jammu & Kashmir has since published.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI P.V. NARASIMHA RAO) : I would like to point out that this is the nomenclature given by some newspapers. There has been no White Paper issued by the Government of Jammu & Kashmir.....

PROF. MADHU DANDAVATE : It may not be 'white', it may be yellow.

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : They may have seen some white paper and taken it literally.

SHRI GEORGE FERNANDES : Even accepting the correction which the hon. Home Minister is making, it is an official document...

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : I have gone on record to say that the situation in Jammu & Kashmir has not quite reached the White Paper stage. That is why there is no White Paper.

SHRI GEORGE FERNANDES : I have read the statement of the Home Minister and I accept the statement of the Home Minister on this matter. But this is an official document. I am sure that the Home Minister does not deny the fact that this 21-page document is an official document of puppet Government of Jammu & Kashmir.....

(Interruptions)

MR. CHAIRMAN (SHRI R.S. SPARROW) : Don't say 'puppet'.

SHRI GEORGE FERNANDES : Allright, the Government of Jammu & Kashmir. If the Government of Jammu & Kashmir had felt the need to come with a 21-page statement which then goes out to the press and on which Mr. Farooq Abdullah is sought to be hanged and those parties of the opposition which are supposed to be supporting him or have supported him are sought to be hanged and a whole case is made out that there were anti-nationals and so on and so forth, then should not this House have been taken into confidence by the Government with a statement ? And are all the demands that we made, the commitment that the Speaker made to us and the promise that the Government made, to be dismissed in one sentence ? This statement, in fact, is entitled : "Statement by...regarding the recent developments in Jammu & Kashmir". I would like to know what exactly is the meaning of the word 'recent'...

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : I do not know...

SHRI GEORGE FERNANDES : This is a government's statement. Perhaps the Home Minister would take refuge under this any say, 'This is not my statement; this is a statement of my Minister of State'...

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : I am not taking refuge on that.

SHRI GEORGE FERNANDES : This is a statement which the Home Minister presented in the other House...

SHRI V.P. NARASIMHA RAO : Yes. I am not taking refuge that somebody else did it.

SHRI GEORGE FERNANDES : What exactly is the meaning of the word 'recent' ? Is it 'one month' or 'two months' ?

SHRI V.P. NARASIMHA RAO : What we have said in that statement is what we understand by 'recent developments'.

SHRI GEORGE FERNANDES : In other words, history begins the day Mr. Farooq Abdullah won the election; that is 'recent'. Because, this statement starts with that :

> "In the State of Jammu a Kashmir certain elements had been indulging in anti-national and secessionist activities since the latter half of 1983..."

In other words, from the time Mr. Farooq Abdullah was elected, his Party was elected and he became the Chief Minister.

Having made my submission so far as the statement is concerned and expressed my total resentment at the manner in which the House has been treated by the Government, let me make my submission now. I am not surprised that Mr. Farooq Abdullah's Government had been dismissed. What surprises me is that it took them so long to do it. I am now going to read out to you a letter which the Prime Minister wrote to a member of Central Parliamentary Board, Mr. Syed Mir Qasim. The letter is dated 2nd July, 1983.

(Interruptions)

This letter is by the Prime Minister of India to Mr. Syed Mir Qasim from the Prime Minister's house, New Delhi, dated July 2, 1983, that is within three weeks of the installation of Farooq Abdullah Government. What does it say ? It is a reply to Mr. Syed Mir Qasim who had written about a lot of things, including the accord. Because the whole dispute now centres around the accord. I was amazed at the

[Shri George Fernandes]

speeches that some of the hon. Members have made here and I am equally amazed at some of the statements that are being made by people outside the House. For instance, the Prime Minister has said some-where in a speech that they have nothing to do with what happened in Jammu & Kashmir; it was a family quarrel. If my memory does not fail me, there are many other Members of the ruling Party also who have made that statement. In fact, such sentiments have been echoed in the House. On the one hand, the Right hon. Members who are sitting on the other side talk about total collapse of law and order, anti-national elements, and so on and so forth; the Pakistanis the Khalistanis—you name them and they are there in Jammu & Kashmir—met Mr. Farooq Abdullah personally.

This is what he said. On the other hand we have people of the ruling party, including the Prime Minister, saying that this whole thing is a family quarrel and what do we know about it. Sir, this is neither a family quarrel nor has it anything to do with the anti-national or whatever thing you want to label people with.

SHRI RAJESH PILOT (Bharatpur) : Sir, does he contradict the statement of the Chief Minister three months back that anti-social elements are active in J & K ?

SHRI GEORGE FERNANDES : There are more anti-social elements active in the Capital of India than in any other part of the country. To whom should we go for rhe dismissal of this government ? So, let us not get into this statement. The whole dismissal of Farooq Government is rooted—and I challenge the Home Minister to counter this —in the so-called failure to implement the Accord between Sheik Abdullah and the congress (I). The Prime Minister says it in so many words. This is what she says and I quote.

(*Interruptions*)

Sir, I shall lay it on the Table of the House if so permitted :—

"Dear Shri Qasim,

X X X X

What had been proposed as a broad-based unity of secular and democratic forces in J & K, of which Congress was undoubtedly a major representative, turned out to be a patched up settlement which left Congress without any significant representation in the Cabinet and virtually led to the exit of our party from the J & K political scene.

X X X X

For me the Accord was, and remains, a method of fruitful cooperation among all the secular and patriotic forces in the State. It certainly did not mean that Congress should fade into oblivion. I did not and cannot accept this interpretation of the Accord. But this seems to be your view. What was worse was that you succeeded in persuading Sheikh Saheb and later Dr. Forooq Abdullah to accept your version. This the root of the trouble that developed between us and the National Conference. This is what lay behind the National Conference's arrogance of power".

You did not give enough representation in the Ministry, you created a political machine, you acquired the support of the people of Kashmir that eliminated my party and she says I shall not accept it.

I quote further :

"The 1983 elections should be seen against this background.

X X X X

The basic question was whether or not Congress as a secular and democratic party would continue to function as a significant political force in J & K. No national leader of the Congress had doubts that anything

that came in the way in other words the people's verdict even if that came in the way—"of such functioning had to be met effectively (it had to be destroyed)."

PROF. MADHU DANDAVATE : Sir, under rule 369 I request you that since this is a sensitive statement read from a paper, the document should be laid on the Table after you have examined it.

MR. CHAIRMAN : After examining it, Yes.

SHRI GEORGE FERNANDES : Sir, once the Prime Minister took this position then naturally the rest of them had to act and they acted. My colleague, Shri Rajesh Pilot, wanted to know whether certain statements had been made by their leaders.

SHRI RAJESH PILOT : No. By Dr. Farooq Abdullah.

SHRI GEORGE FERNANDES : How they started reacting? The first one to react was no less a person than the working President of the Congress (I).

What does he say? I am quoting from the paper called 'Khidmat' which is the official organ of the Congress-I in Jammu and Kashmir. The statement of the Working President of the Congress (I), Mr. Kamalapati Tripathi says like this—

"Our party cannot remain silent about the way National Conference got succeeded its candidates"
It is in the Khidmat, 18 June 1983.

(Interruptions)

Again, following this Maulvi Iftikhar Ansari made it clear which appeared in 'Khidmat' 20th June 1983—

"the struggle against National Conference's activities will continue without any break."

This is from the official organ of the Congress-I. Then on the 14th June, 1983, Maulvi Iftikhar, Congress-I leader declared that—

"normalcy cannot be allowed to be restored unless elections are held afresh."

On 28th June, 1983, he repeated it—

"the Congress-(I) will not rest unless the results of the election are undone".

हम चैन से नहीं बैठेंगे ।

Then, the hon. Member of this House Mr. Arun Nehru, went to Srinagar and issued a similar threat on 1st July, 1983.

"we will not accept the defeat before the National Conference Government."

Then, Sir, we had this conclave in Srinagar, the parties represented in this House. Some of them run Governments in different States. The Janata Party runs the Government in Karnataka, the Marxists run the Government in West Bengal and Tripura, N.T. Rama Rao party, Telugu Desam, runs the Government in Andhra Pradesh. So, all these parties met together in Srinagar and Dr. Farooq Abdullah was present in that conference. As soon as this convention was held it was generally called a conclave there were three statements which came out. Mr Mufti Syed, the President of the Congress-I in Jammu and Kashmir had said in his statement as—

"Farooq Abdullah has strengthened the hands of those who want to weaken the Centre for separatist ends. They just want to destroy the stability of the country."—Again, Khidmat.

(Interruptions)

DR. RAJENDRA KUMARI BAJPAI : Where was the stability ?

SHRI GEORGE FERNANDES : If you believe so, you must disqualify all of us from the membership of this House. If you believe that we are anti-national...

(Interruptions)

SHRI SONTOSH MOHAN DEV : That, people will decide.

SHRI GEORGE FERNANDEES : What the people will do, the people will decide. Don't speak for the people.

(*Interruptions*)

PROF. MADHU DANDAVATE : Sir, it is too late in the day to learn Patriotism from the Prime Minister.

SHRI GEORGE FERNANDES : Then, Sir, Mr. Malik M. Din and Mr. Abdul Qayoom, General Secretaries of PCC-I say like this—

"Opposition conclave in Srinagar is a conglomeration of anti-national forces which are bent upon destroying the unity and integrity of India."

Again, Khidmat.

(*Interruptions*)

Then, again, Mr. Mufti Sayed says—"The prevailing situation in Jammu and Kashmir is very serious. So, the Governor must utilise his powers and intervene." (Khidmat 17 Oct. 1983)

And your own predecessor, hon. Minister, Mr. P.C. Sethi, has been quoted again by your paper, the Daily Jammu and Kashmir.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI P.V. NARASIMHA RAO) : Can he quote what he said in the Party Office ?

(*Interruptions*)

SHRI GEOGRE FERNANDES : It is very important because you said 'recent is this'. That is why I asked you. If you had not clarified, Mr. Home Minister, the word 'recent' to mean this, then I would not come to this.

(*Interruptions*)

This is your Daily Paper and this is your official paper.

PROF. MADHU DANDAVATE : They are talking about the rumours and we can not talk about your official organs.

SHRI GEORGE FERNANDES : Again, your official organ, Khidmat, dated 19th October 1983, carries the statement of Mr. P.C. Sethi—

"The Centre feels concerned about the emergence of anti-national and secessionist forces in Jammu and Kashmir."

Then the statement from the working President of Congress-I Mr. Kamalapati Tripathi came in the Indian Express, November, 83—

"Jammu and Kashmir Chief Minister, Farooq Abdullah was befriending forces which wanted to create instability and disrupt the unity of the country."

He means those parties belonging to Opposition which participated in the Conclave in Srinagar.

(*Interruptions*)

It surprised me that it took the Prime Minister and her Party thirteen long months from the moment Farooq Abdullah's Government was installed to the toppling of that Government. So, the fact is that we were aware that on the day Shri B.K. Nehru was recalled and the one-man demolition squad, Mr. Jagmohan, expert in demolitions—the history of Turkman Gate Jhuggis and jhomparis is there—was sent to Srinagar, everybody knew that the die is cast and that it is only a question of time. Lost of statements were made as to what Members said and what Members did.

I called on the Governor on 14th of this month and I spent a good long hour with the Governor in Srinagar. The Governor gave me a blow-by-blow account of what has happened. The

Governor said that at 10.30 on the night of 1st, he received a telephonic call from certain MLAs. The told him that they wanted to go to the Governor's house right then. The Governor told them that he was sorry, he could not accommodate all of them in his house for the night. They told him that if they would go to him in the morning, they would be lynched in the streets. That is the popular support they have got. whose Government has been installed in Kashmir with your support. So the Governor asked them to come in the morning. These gentlemen have trooped in at 5.30 in the morning. But even before 5.30, at 3.30 in the morning, the Madhya Pradesh Special Army Police had started flying into Srinagar. A number of other paramilitary and security forces had started arriving. I asked the Governor as to how this could happen. He dismissed the Farooq Abdullah's Government in the morning and sworn Mr. G.M. Shah as the Chief Minister in the evening. but the paramilitary forces had flown in at 3.30 in the morning. Do you know, Sir what the Governor's reply was ? The Governor told me that he did not have anything to do with the order regarding para-military forces. Senior police officers were competent to do this and they had a certain inadequate number of para-military forces and therefore it was the senior police officers who handled that and he has had nothing to do with it.

I did not accept the word of the Governor and I told him so.

Shri Farooq Abdullah was woken up and summoned to the Governor's house at 7 in the morning. But whom did he find there ? He found two generals—two ar my generals; the man who commands the troops in that area, General Chibber and General Hoon.

(Interruptions)

SHRI GEORGE FERNANDES : He found those two army · generals, 12 defectors and the Director General of Police at 7.30 in the morning in the Governor's house.

AN HON. MEMBER : What is wrong with that ?

SHRI GEORGE FERNANDES : What is wrong ? Everything is wrong. Absolutely wrong and unconstitutional.

The Chief Minister goes there and he is handed over a letter. Here is the text of the letter. The letter has been published. It is a public document and no longer remains a secret, The Governor told the Chief Minister that 12 MLAs had gone to him and told him that they were no more supporting Mr. Farooq Abdullah. He told him that he also had a letter from the Congress-I saying that they were supporting those 12 people. The Governor told the Chief Minister that he had lost the majority and therefore he is going to ask him to resign. The Chief Minister sees the twelve gentlemen and the two army generals there. He realises the size of the problem. He tells the Governor, "you order Governor's rule." The Governor at which point makes a post-script on that letter. This is the post-script.

> "We have since met and discussed the matter. You advised me to impose Governor's rule under Section 92 of the Jammu & Kashmir Constitution and keep the Legislature in suspended animation. I shall be gratefuj if you could kindly send me your confirmation in this regard in writing immediately."

Then Sir, when Mr. Farooq Abdullah finished his talks with the Governor he told him that he could not take a decision as he had to consult his Council of Ministers.

That is precisely what it meant. I do not know why the Home Minister is shaking his head. It says : "I shall be grateful if you could kindly send me your confirmation in this regard, in writing immediately."

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : What does confirmation mean ? He has agreed personally. Governor wants him to confirm it. That is all.

SHRI GEORGE FERNANDES : "You send me your confirmation." Farooq Abdullah goes back to his Government and...

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : And then changes his stand.

SHRI GEORGE FERNANDES : He goes to his Council of Ministers, but he does not change his mind. He writes a letter, and in this letter, he says after consulting his Cabinet : "I have considered the matter in depth, in consultation with the colleagues of my Cabinet, and wish to inform you that democratic traditions require that the question of loss of confidence should always be tested on the floor of the House." So, he says : "Convene the Assembly. Let me see if I have the majority or not, on the floor of the House. If I do not have the majority on the floor of the House...", then he falls back on the Constitution of Jammu and Kashmir, which makes it obligatory for the Governor to accept the advice of the State's Council of Ministers. Section 35 (2) of the Constitution of Jammu and Kashmir says :

> "All functions of the Governor, except those under Sections 36, 38 and 92 shall be exercised by him on the advice of the Council of Ministers."

I would now refer to the delightful statement which hon. Member Dr. Rajendra Kumari Bajpai made. I was very happy to hear her say certain things this afternoon, while intervening in this debate, because it really gave me delight to hear from her mouth.

शेख अब्दुल्ला महान् देशभक्त थे जिन्होंने देश के साथ काश्मीर को मिलाया। शेख साहब ने सेक्युलर स्टेट बनाई थी। जिस को उनके बेटे ने बिगाड़ने का काम किया।

But I appreciate what she had to say about Sheikh Abdullah, this great man, this great patriot ...

(Interruptions)

SHRI M. RAM GOPAL REDDY : rose

SHRI GEORGE FERNANDES : This is beyond you, Mr. Reddy. We are not discussing sugar. We are discussing Jammu and Kashmir. Sheikh Abdullah who not only got the accession of the State, but also brought in secular administration, gave a secular administration to the State, between 1953 and 1975, was either in prison or in exile and branded inside the country and out-side by your Government and your party as a traitor to the cause of this country. Posthumously, but coming from her, I am really delighted, and I want to thank her for that statement from the bottom of my heart, because we owe it to Sheikh Sahib that someone should stand up and say in this House that he was a great patriot, and he was the man who brought secular rule to that State. But it was this Sheikh Abdullah support to whom you withdrew in 1977 when the Janata Party came to power; and Sheikh Abdullah was surviving, on the basis of the 1975 accord because of the support which your party was giving. You know what a member of your own Central Parliamentary Board has to say, about the withdrawal of this support. I quote from the letter from Mr. Mir Qasim, the former Chief Minister, The hon. Member, Kumari Bajpai was saying how you rencunced power, and how you made Mir Qasim resign and make room for Sheikh Abdullah. So, such a great man, the man who was prepared to renounce power, a distinguished member of your party, a member of your Central Parliamentary Board, a member of your Council of Ministers here at the Centre, a man who held the fort for you when Sheikh Abdullah was out in the cold for a number of years—he writes to the Prime Minister of 17th July 1983—and I quote :

> "Subsequent events, however, conclusively established the fact that Sheikh Sahib did not get the trust he expected."

And further :

> "The withdrawal of the support by our legislators to Sheikh Sahib in 1977

when the Janata Government had come to power at the Centre, was a stab in the back."

This is what you did to the great patriot, mahan deshbhakt who integrated Jammu and Kashmir with this country who gave a secluar administration to a State where communal forces, according to you have always been trying to gain the upper hand. According to a member of your Central parliamentary Board Syed Mir Qasim, you gave him a stab in the back.

"He could not be expected to construe it as a charitable act on our part aimed at achieving the "object of bringing together political forces anchored in the common experience of struggle against feudalism and imperialism for the economic and social progress of J & K and of our country as a whole." We invited the 'exit of our party from the J & K political scene." This was written by Mir Qasim to the Prime Minister on the 17th July, 1983.

You withdrew support which Sheikh Shahib had, and when he became two member Cabinet; he and Miraza Afzal Beg were the two people who survived in the Assembly; there was a two member cabinet for all purposes: and then this Cabinet took a decision that the Assembly shall be dissolved on the basis of Article 352 of the J & K Constitution and the Governor disowned the Assembly. Who brought this letter to the Capital on behalf of Sheikh Abdullah ? It was Mr. D.D. Thakur, a great legal luminary, who is now the Deputy Chief Minister.

(Interruptions)

DR. RAJENDRA KUMARI BAJPAI : There was no scope of forming an alternative Government; that is why it was dissolved.

(*Interruptions*)

SHRI GEORGE FERNANDES : Your Congress Party had a majority.

(Interruptions)

They were not interested in forming a government or they were not able to from a government are two different things. This is the most astonishing confession to come from the General Secretary of the Ruling Party that with a majority in the House, two member Sheikh Abdullah Cabinet had more power, political support among the people than their overwhelming majority in the House.

(Interruptions)

The Constitution of J & K has been defiled by the Governor; the Governor has acted contrary to that; the Governor has defiled the Constitution or has not bothered to consider the fact that there is Anti-Defection Law, which says that the moment a member ceases to give his loyalty to the party which had brought him to the Assembly, he ceases to have the right to vote. Under the law, he ceases to be a member. The law was challenged in the High Court. In 1981, the High Court upheld the law. Then the concerned member went to the Supreme Court and there is a judgement of the Supreme Court pending the final disposal of the case. It upheld with the limited modification that the member shall retain his seat but shall not have the right to vote. I asked the Governor about it. He said, "This is the split". I told the Governor, "Mr. Governor, you are not to decide about the split; whether a party has a split or not is not for the Governor to decide; this is the function of the Election Commission. Have you yourself assumed the power of the Election Commission ?" He had no reply; he had an explanation but no reply.

You have the Constitution. That has been defiled. You have a law. That has been trangressed. Then there are certain conventions that have been accepted. We had a very distinguished Speaker who, while inaugurating the Presiding Officers' conference made a very significant observation, which I want to quote. He said, "I'm no circumstances it should be left to the Governor to determine whether a Chief Minister continues to enjoy the support of the majority of the members

Shri Georage Fernandes

or not. Even if the members make their opinions known to the Governor in writing, it is the prerogative of the Assembly to decide this issue". This is what the distinguished Speaker said who later became the President of this country.

Then there was a Committee of Governors which was set up by the President of India in 1971. This Committee gave its report. The Committee said, where the Governor is satisfied by whatever process or means that the Ministry no longer enjoys the majority support, he should ask the Chief Minister to face his Assembly and prove his majority within the shortest possible time. If the Chief Minister shirks his primary responsibility and fails to comply with it, the Governor would be duty bound to initiate steps to form an alternative Ministry. In the case of the Chief Minister heading a single party government which has been returned by the electorates with an absolutely majority. if the ruling party loses its majority because of defection by a few members and the Chief Minister recommends dissolution so as to enable him to make a fresh appeal to the electorates, the Governor may grant a dissolution. The more fact that a few members of the party have defecteddoes not necessarily prove that the party has lost the confidence of the electorates.

Now, these are the two observations or recommendations of the Committee of Governors submitted to the President of India. Now, I would particularly draw the attention of the hon. Home Minister, I want to have his particular attention.....

(Interruptions)

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : You have all my attention.

SHRI GEORGE FERNANDES : I want to draw your attention to something, which is the official document of the Jammu & Kashmir Government had issued. On the recommendation of the Committee of the Governors, a Committee appointed by the President of India, and a Committee which submitted its report to the President of India,— please understand that institutions are being denigrated.

(Interruptions)

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : Will You...

(Interruptions)

SHRI GEORGE FERNANDES : Please understand this, and I am quoting from the *Times of India*, which has given a report, a good report, because this paper has put out a report, a considerable length

1606 HRS. (DR. RAJENDRA KUMARI BAJPAI in the chair)

This is what the Paper of the Government, which you are supporting, says,

> "It has been argued by the opposition that a Committee of the Governors had recommended that the Governor should not count the heads in the event of a dispute regarding majority. That may be so, but it is nowhere proved that such a recommendation was ever accepted by the Parliament or the Government of India. In our view"...

namely the view of Mr. Gul Shah,

> "if ever such a recommendation was made by the Governors' Committee,..."

look at the contempt.

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : I am going to ask you whether it has been acted upon anywhere. We have these reports. I am not denying the reports. I want to know from senior hon. Members of this House, whether the Chief Minister having lost his majority, there has ever been any test on the floor of the House, and if so what is the percentage of those cases and what is the percentage of the other cases ?

SHRI GEORGE FERNANDES : That is not the issue. Let me make my submission. You participated in the debate, Madam Chairperson. You referred to 1967. You were right in so far as facts were concerned. Because of 1967, because of what happened in 1968, 1969 and 1970, the President thought it proper to appoint a Committee of Governors on this question. This is the recommendation that has been made.

SHRI GIRDHARI LAL VYAS : You reply.

SHRI GEORGE FERNANDES : I am replying. I am replying. This is my problem. None of you understand.

I am not trying to score a debating point.

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : I am also not scoring any debating point. That is why I have addressed a question to all the senior leaders sitting here. I also have a little seniority. I have racked my brain. I have not come across any such situation. If you give any instances, please tell me what is the incidence of such instances.

SHRI C.T. DHANDAPANI (Pallachi) May I make a statement ? Normally, in the dismissal of the State Government or whatever may be, the Governors are agents of the Central Governments. They act as the agents of the Central Government. Either the Governor or the Speaker has to decide and if he automatically dismisses the Government, where will be the opportunity to convene a meeting ? and prove the majority ?

SHRI GEORGE FERNANDES : I think the hon. Home Minister understands me and I understand the Home Minister. if the ruling party members cannot understand that is not my fault.

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : I just wanted to know the factual position From recollection, our hon Members can tell me. It is only for my edification. You go on.

SHRI GEORGE FERNANDES : My point is not whether this has been implemented or this has been accepted. What concerns me is the utter contempt which the Jammu & Kashmir Government shows towards the authority of those Governors who made their recommendation, and to the office of the man who appointed that Committee, namely, the President of India. That is my concern. I will quote this. I want the hon. Home Minister, if he has not gone through the paper, to kindly bear with me and listen.

"In our view"—he is speaking now with a royal prerogative—"if ever such a recommendation was made"—look at the contempt – "by the Governors Committee, it was wholly unwarranted, unjustified and unsupported by the Constitution". Each one of these Governors was appointed by this Prime Minister. The President was elected by an electoral college of which many of us are members. And here is a Chief Minister—you despise my calling him a puppet Chief Minister—who has the audacity and arrogance to say that even if such a recommendation was made...

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : If he had been a puppet, he would not have said that.

SHRI GEORGE FERNANDES : There are occasions when puppets also learn to cock a snook. Your puppet has already started cocking a snook at you. Let me warn you that Mr. Gul Shah was the man, who, on the Re-settlement Bill—forget all history; you heard Mr. Brahmanand Reddy speak about his biography; I do not want to discuss people's biography; All of us can discuss each other's biography—only last year in the Legislative Council called Mr. B.K. Nehru an agent of India. He went further and said : Either sign the Re-settlement Bill or resign. This is Gul Shah. So, puppets have their uses and puppets also know the cock a snook...

(*Interruptions*)

He said : If at all such a recommendation was made by the Governors Committee, in our view...

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : Go to some other point.

SHRI GEORGE FERNANDES : I want you to reply to this. I want to know whether you agree with this kind of a total dismissal of the recommendations of the Governors Committee made to the President of India.

I have made my points in sofaras constitutional and legel propriety of this matter is concerned.

The last point that I want to make is in the context of what is happening today in Jammu & Kashmir. You have been taking recourse to every conceivable means to browbeat people. Yesterday, there was an incident in the Legislators Home where muscleman moved in and started beating up legislators. I have received a letter from one of the legislators just now saying that he has received a letter that he would be killed if he supports Farooq Abdullah's side on the day of trial of strength i.e. 31st. There is nothing in terms of using money, using muscle, using State power that you have not done since the day you decided that the Ministry should go. Your Mufti made an announcement on 25th of June which appeared in the newspapers on 26th of June, that very soon you are going to have a very pleasant surprise insofaras J & K Government is concerned That surprise came on the 2nd. Between 2nd and 19th you had to run your Government by imposing curfew in the capital city of Srinagar. Your Ministers could not go out. Your Ministers dare not go out. Your Ministers where scared of the the people on whom they wanted to rule. I was an eye-witness to the situation there. There were other colleagues of mine who were also eye-witnesses. Members of Parliament, General Secretaries and Presidents of political parties were confined to house arrests in the capital city of Srinagar. Subsequently, when I was in Srinagar; I was an eye-witness to the situation prevailing there.

But for the presence of the paramilitary, and to some extent the presence of the army, the Gul Shah Ministry in the first place could not be installed and in the second place it can not survive. So, I do not know whether any kind of a request to the Home Minister is going to make any sense or evoke any response because of what I have quoted in terms of your Prime Minister's letter to Syed Mir Qasim, a Member of the Parliamentary Board of the Party. I only want to sound a note of warning. You have taken Jammu and Kashmir back to 1953. You are trying to re-enact history, but a very great man said about the history that first it is not repeated, but should it repeat, it repeats as a fall. So, please do not play with the lives of the people of Jammu and Kashmir. The Leader of your Legislative Party Mr. Iftikhar Ansari said that when we removed Sheikh Abdullah in 1953—of course, when he said 'we', he was not a part of the 'we' then—1,500 people had died then and now nobody has died. It shows that everybody has accepted what has happened. This was Mr. Ansari's statement that 1,500 people died when Sheikh was removed in 1953. It is to the credit of a man called Dr. Farooq Abdullah that he has brought the Kashmiri people into the mainstream of Indian party politics. He made slight his alliance with the Opposition, he made slight his campaigning for the Opposition though you would welcome his campaigning you as you did in 1980 and again in the Municipal elections right here in 1983. Just before the General Elections, you held the Municipal elections here in April or May 1983 and he came and campaigned for you and his votes were decisive, his support to you was decisive to give the Delhi Metropolitan Council and the Delhi Municipal Corporation in your hand. Don't try to erase these things. Don't disown even if you want to condemn a man, don't disown your own part because that it is a part of history, that is a part of your past.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Shameless people.

SHRI GEORGE FERNANDES : Farooq Abdullah had succeeded in doing

what nobody before him was able to do to get the people of Jammu and Kashmir into the mainstream of India's party politics. Please do not create conditions in Jammu and Kashmir. I know it may suit your Prime Minister's political strategy, both short-term and long-term...

(*Interruptions*)

I charge the Prime Minister...

(*Interruptions*)

Punjab example is an eloquent example, Jammu and Kashmir is an eloquent example of this...

(*Interruptions*)

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI GHULAM NABI AZAD) : That shows that we are already in...

(*Interruptions*)

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, SPORTS AND WORKS AND HOUSING (SHRI BUTA SINGH) : Don't insult the people of Jammu & Kashmir are more patriotic than anybody else...

(*Interruptions*)

SHRI GEORGE FERNANDES : So, it is my charge that in Punjab and Jammu and Kashmir, the Prime Minister is following the policy of national disintegration...

(*Interruptions*)

SHRI GHULAM NABI AZAD : It is a charge against your friend and not against the people of Jammu and Kashmir. Don't give a wrong statement...

(*Interruptions*)

People of Jammu and Kashmir are more patriotic than anybody else...

(*Interruptions*)

This is a charge against your friend and his party, not against the people of Jammu and Kashmir...

(*Interruptions*)

SHRI GEORGE FERNANDES : I would conclude by saying that if Farooq Abdullah had to go for all the things that some of them are now trying to say, even while they are discussing about the family and so on and so forth...

(*Interruptions*)

Someone made a mention that arms came, someone made a mention that Sikh Students Federation chaps were found, someone made a mention that some aircraft was hijacked. How many aircrafts have been hijacked in India ? Whose governments were there when aircrafts were hijacked ?...

(*Interruptions*)

In Darul Shafa in Lucknow, there are sign boards showing : I am an MLA, I hijacked...

(*Interruptions*)

PROF. MADHU DANDAVATE : Madam, give your tender protection to him...

SHRI GEORGE FERNANDES : If Shri Farooq Abdullah had to go for the so-called crimes, which he did not commit, but which he is alleged to have commited, the Government of Shri Darbara Singh should have gone first and, thereafter, the Government of Mrs. Indira Gandhi should have gone next, before the Government of Shri Farooq Abdullah is dismissed, because it is your party, it is your government, it is your Prime Minister who is today the biggest de-stabilising factor in the country's politics, the biggest factor bringing about disintegration of the country. So, I would submit that if one Government has to go, it is this Government which has to go.

[Shri George Farnandes]

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI P.V. NARASIMHA RAO) : Madam, before you call the next hon. Member, I would like to share some latest information on Kashmir.

Acting Chief Justice of Jammu and Kashmir High Court, Shri Adarsh Saini Anand today held that the 12 National Conference legislators, who withdrew support to the dismissed Chief Minister, Shri Farooq Abdullah, and extended support Chief Minister Shri G.M. Shah on July 2nd, to enable the latter to form an alternative government, had not incurred any disqualification.

(*Interruptions*)

I am only reading what came in the ticker...

(*Interruptions*)

The next one is still more interesting. While the High Court is saying they have not incurred disqualification, the Jammu and Kashmir Assembly Speaker, who has absolutely no power to do anything, it is the High Court...

An hon. Member : Let us know what it is; not your opinion.

SHRI P.V. NARASIMHA RAO : It says :

Shri Wali Mohammad Itto today disqualified certain members of the National Conference who have extended support to the Chief Minister, Shri G.M. Shah, from being members of the State Legislative Assembly...

(*Interruptions*)

I do not want to comment on this.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, SPORTS AND WORKS & HOUSING (SHRI BUTA SINGH) : Madam, I have a request to make. Since the hon. Members are taking much longer time and there is a large number of hon. Members who want to participate in this debate, it will not be possible for us to conclude it today Therefore, it may be continued tomorrow.

MR. CHAIRMAN (DR. RAJENDRA KUMARI BAJPAI) : As a large number of hon. Members want to speak on this subject, the debate will continue tomorrow.

SOME HON. MEMBERS : Agreed.

SHRI INDRAJIT GUPTA (Basir bat) : This decision should be final. It should not be changed again.

MR. CHAIRMAN : It is final.

SHRI INDRAJIT GUPTA : Last time, we were told that the discussion will continue the next day and then it was concluded the same day.

MR. CHAIRMAN : It will continue.

ऊर्जा मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री आरिफ मोहम्मद खां) : इससे पहले कि मैं अपनी बात शुरू करूं, अभी अभी जब माननीय गृहमन्त्री जी ने इस माननीय सदन को सूचित किया, कश्मीर हाई कोर्ट के निर्णय के बारे में और कश्मीर असेंबली....

मैं जार्ज साहब से कह रहा था और वे ही जा रहे हैं। मैंने देखा कि माननीय सदस्यों में स्पीकर के निर्णय के बारे में तालियां बजाकर उसका स्वागत किया। मैं यह सोच रहा था कि अगर वही निर्णय इन माननीय सदस्यों पर लागू होने लगे जो कश्मीर असेंबली के स्पीकर ने दिया है तो कितने दिन पहले माननीय जार्ज फर्नान्डिस इस सदन की सदस्यता से वंचित हो गए होते और कितने दिन पहले यह फैसला और दूसरों पर लागू हो गया होता।

व्यवधान पैदा करने पर मुझे कोई एतराज नहीं है। लेकिन, इस तरह व्यवस्था पैदा करें

कि मैं सुन सकूं और और जवाब दे सकूं (व्यवधान) मैं समझता हूं कि सारी समस्या यह है कि कश्मीर की समस्या को कश्मीर में होने वाली घटनाओं को, खासतौर से हमारे विपक्ष के माननीय सदस्य या तो केवल अपने मित्रों के या उन अखबारों के माध्यम से सुनना चाहते हैं, जिनको उचित और अनुचित, हर तरह से केन्द्रीय सरकार की आलोचना करनी है। अगर विपक्ष के माननीय सदस्यों ये यह तकलीफ गवारा की होती कि श्रीनगर वैली में या वहां के दूसरे हिस्सों में जाकर वहां की घटनाओं के अध्ययन करने का प्रयास करते। मुझे विश्वास है कि उन्हें भी दूसरे का दुख देखकर दुख होता। अगर वे भी भारत विरोधी गतिविधियां देखेंगे तो उन्हें भी चिंता होगी। इस बात पर वे भी सहमत होंगे कि आतंकवादियों को संरक्षण न दिया जाए। मेरा, उनसे यह निवेदन है कि वे थोड़ा काश्मीर की स्थिति के बारे में अध्ययन करें। आज, फारूक साहब से भी मुझे हमदर्दी हो रही है और मैं आपके माध्यम से उनके प्रति हमदर्दी व्यक्त करना चाहता हूं। फारुक अब्दुल्ला साहब की डिसमिसल को लेकर जब इस सदन में चर्चा होती है तो विपक्ष के सदस्यों की कुल तादाद इस वक्त कितनी है? इस विषय पर उनकी ओर से कोई भी पहले स्तर का नेता बोलने नहीं जा रहा है। हरेक पार्टी ने अपने दूसरे और तीसरे स्तर के सदस्यों को बोलने के लिए लगाया है। जार्ज साहब तो खुद बोलकर चले गए और विपक्षी दल ही क्यों खुद नेशनल कान्फ्रेंस के तीन सदस्य हैं। उनमें से सिर्फ सोज साहब मौजूद हैं। बाकी दो सदस्य मौजूद नहीं हैं।

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Mr. Kabuli is in Srinagar and Mr. Kochak has left for Huj.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : जब नेशनल कान्फ्रेंस के सदस्यों को ही दिलचस्पी नहीं है तो दूसरे विपक्ष के सदस्यों को कैसे हो सकती है! सही बात कहने के लिए मन में शंका है, इसलिए इस मामले पर इस प्रकार का ठंडा रवैया है। जार्ज साहब को मैंने बहुत रोका, लेकिन वे फिर भी उठकर चले गए। जब इस ओर से माननीय सदस्य ने कुछ बात कहने की कोशिश की तो माननीय जार्ज साहब ने कहा :

> "It is beyond you. We are discussing Jammu and Kashmir. This is not sugar."

मैं उनसे बिल्कुल सहमत हूं। अधिकार सबसे ज्यादा जार्ज साहब को हैं, इसलिए कि यह विषय ऐसा है जिसमें हिंसा, घरों में आग लगाने, मासूमों की जान लेने, पुल उड़ाने, सरकारी सड़कों और सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाने के किस्से हैं। तो, निश्चित ही कोई व्यक्ति सबसे ज्यादा अधिकारी है, इस विषय पर चर्चा करने का तो वह माननीय जार्ज साहब हैं। इसलिए कि उनका इतिहास इस बात से मिला-जुला है, सरकारी सम्पत्ति, रेलवे ट्रैक और मासूमों तथा निहत्थे लोगों को नुकसान पहुंचाना। लेकिन, चर्चा करने के बाद उनको थोड़ी देर के लिए रुकना चाहिए था और सुनना चाहिए था। उसको भी सुनना चाहिए था।

सभापति महोदय, मैं इस मामले के संवैधानिक पहलू में नहीं जाना चाहता। हमारी पर्टी की महामंत्री, डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेई ने उस पर काफी रोशनी डाली है।

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) व्यक्तित्व तो एक ही है।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : मैं संवैधानिक पहलुओं में नहीं जाना चाहता, उस पर काफी चर्चा हो गई। मैं समझता हूं कि शायद अपोजीशन के माननीय सदस्यों के मन में कहीं यह धारणा है कि कांग्रेस (आई) की जिम्मेदारी

[श्री आरिफ मौहम्मद खां]

केवल देश और प्रदेशों की सरकारें चलाने की ही नहीं है, बल्कि यह भी जिम्मेदारी है कि हम विरोधी दलों को भी अच्छे तरीके से चलायें। अगर आपके अपने दलों के अन्दर झगड़े और बटवारे होते हैं, अगर सरकार की या कहीं नेता की निष्क्रियता के कारण वहां के सदस्य उस नेता और सरकार से नाराज होते है, तो क्या आप इसे हमारी जिम्मेदारी यह समझते हैं कि हम उन सदस्यों को जबरदस्ती पकड़ कर रखें ?

मेरे पास श्रीनगर से ही निकलने वाले अखबार की कापी है, और सोज़ साहब मुझ से तहमत होंगे कि वह अखबार फारूक अब्दुल्ला का विरोधी नहीं है, बल्कि उसका मालिक फारुक अब्दुल्ला का नजदीकी रिश्तेदार ही नहीं है बल्कि समर्थक भी है। उस अखबार का नाम है "आफताब" मैं जितना पढ़ता हूं उस अखबार को मैंने हमेशा उसको फारूक अब्दुल्ला का समर्थक पाया और अपनी उसी समर्थन की भावना के साथ उसके एक सम्पादकीय लिखा, यह आज से 6 महीने पहले का संपादकीय है, यह लिखता है कि जिस तरह 1953 में शेख साहेब को सरकार से हटाया गया था आज अगर उसी तरह की स्थिति पैदा होती है, फारूक अब्दुल्ला को सरकार से हटाया जाता है तो उसके परिणाम क्या होंगे ? अखबार लिखता है शेख साहब ने अपने आपको कश्मीर और कश्मीरी लोगों के लिये समर्पित रखा, शेख साहब का बहुत बड़ा व्यक्तित्व था, लेकिन उन्होंने अपने आपको कश्मीर और कश्मीरी लोगों के लिये समर्पित रखा और उनकी भलाई के लिये काम करते रहे। फारुक अब्दुल्ला ने चीफ मिनिस्टर बनने के बाद, उन्होंने विपक्ष के कानक्लेव वर्ड अटैंड किये हैं, उन्होंने मुल्क के दूसरे हिस्सों में जाकर जन सभाओं में हिस्सा लिया है, लेकिन उन्होंने कश्मीर के गरीब लोगों की हालत सुधारने के लिये या वहां के ऐडमिनिस्ट्रेशन को ठीक करने के लिये कोई ध्यान नहीं दिया और अखबार लिखता है कि अगर 1953 की तरह फारुक अब्दुल्ला को अगर सत्ता से हटाया गया तो यह मुमकिन है कि देश के दूसरे हिस्सों में उस पर प्रोटेस्ट किया जाय, लेकिन कश्मीर के अन्दर स्थिति यह है कि अगर फारूक अब्दुल्ला हटाये गये तो यहां पर कोई उस पर किसी किस्म की मुखालिफत या एतराज नहीं करेगा .....(व्यवधान)

प्रो० सैफुद्दीन सोज़ (बारामूला) : दो हफ्ते के लिये जो वहां करफ्यू लगा वह इस बात को गलत साबित करता है।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : यह मेरा आरोप नहीं है, यह फारूक अब्दुल्ला की नेशनल कान्फ्रेंस के राज्य सभा के एक माननीय सदस्य के छोटे भाई जिस अखबार के मालिक है, जो रात दिन फारूक की तारीफ में अखबार छापते हैं, यह उस अखबार का सम्पादक है और उसने अपने सम्पादकीय में यह लिखा है जो मैंने आपको बताया। .....

प्रो० सैफुद्दीन सोज : दो हफ्ते का करफ्यू जो लगा वह क्या साबित करता है।...

सभापति महोदय : (डा० राजेन्द्र कुमारी वाजपेई) : आप बैठिये, आपको बोलने का मौका मिलेगा।

सभापति महोदया : आप बैठिए, आपको जब बोलने का मौका मिलेगा तो उस वक्त आप बोलियेगा।

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN : I am not yielding at the moment. Please let me complete what I want to say.

सभापति महोदया : जब वे खड़े हैं, बोल रहे हैं, तो आप बीच में इंटरप्ट मत कीजिए।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : उसी अखबार ने अपनी हमदर्दी की भावना से फारूख अब्दुल्ला साहब को यह मशवरा दिया कि खुदा के वास्ते काश्मीर के मामले में ज्यादा दिलचस्पी लीजिए, कश्मीर के हालात खराब हो रहे हैं, उन हालात को सुधारिये, कश्मीर के इंतजाम को ठीक कीजिए, कश्मीर के एडमिनिस्ट्रेशन को ठीक कीजिए, यहां के लोगों के हालत को ठीक बनाईये । लेकिन फारूख साहब को हालात को ठीक करने की बजाए उन बम्बई से आने वाली फिल्मी कलाकारों को मोटर साईकिल पर बिठा कर घुमाने का शौक ज्यादा था और वे पहलगाम में बम्बई से आने वाली उन फिल्मी आर्टिस्टस को मोटर साईकल पर पीछे बिठा कर सुबह से शाम तक चक्कर लगाया करते थे । लेकिन कश्मीर के गरीब लोगों के लिए, कश्मीर के किसानों के लिए, कश्मीर के लिए कुछ नहीं किया ।

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Is it relevant to the discussion ?

सभापति महोदया : जब आपको मौका मिलेगा तो आप पोजीशन क्लिअर कर दीजिए। अभी आप बैठिए ।

एक **माननीय सदस्य** : उस फिल्मी कलाकार का नाम भी बता दीजिए ।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : कलाकार का नाम मैं नहीं बताऊंगा ।

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN : I think he has not followed.

What I was saying is he was more interested in roaming around with film personalities of Bombay.

उन्हें पीछे मोटर साइकल पर बैठाकर गांव में घुमाने का शौक ज्यादा था ।

MR. CHAIRMAN (Dr. Rajendra Kumari Bajpai) : You may please hear him. Do not interfere. You will get your own time.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : सभापति जी, अगर माननीय सदस्य को मेरे ऐसा कहने पर ऐतराज है ···(**व्यवधान**)

प्रो० सैफुद्दीन सोज : एन्टी डिफैक्शन लॉ के बारे में सुप्रीम कोर्ट की ओपिनियन भी देख लीजिए ···(**व्यवधान**)

پروفیسر سیف الدین سوز : اینٹی ڈی فیکشن لا کے بارے میں سپریم کورٹ کی اوپینین بھی دیکھ لیجئے۔

सभापति महोदया (डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी) : माननीय सदस्य, जब आप बोलेंगे तो अपने कानून और सब बातों के बारे में बता दीजिए, आपको मौका मिलेगा । आप बीच में क्यों इन्टरप्ट कर रहे हैं ।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : सभापति जी, मुझे इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं है कि बम्बई के किस फिल्मी कलाकार को वे पीछे अपनी मोटर साइकल पर लेकर घुमाते थे या बम्बई के किस कलाकार के गले में हाथ डालकर नाचते थे । फिल्मी मैगजीनों में जो फोटो छपे हैं मुझे उनमें भी कोई दिलचस्पी नहीं है । यदि माननीय सदस्य को कोई ऐतराज है तो मैं माफी मांग लेता हूं इसलिए कि इन बातों में वे किस के साथ नाचते है और पीछे बिठाकर पहलगांम की सैर करवाते हैं । मुझे कोई (**व्यवधान**) दिलचस्पी नहीं हैं ।

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Madam this is not relevant. He is talking about the private life of Dr. Farooq.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : मैं तो यह कह रहा हूं कि फारूख अब्दुल्ला साहब ने खुद अपने इंटरव्यू में कहा है कि चूंकि वे नौजवान हैं

[श्री आरिफ मोहम्मद खां]

इसीलिए नौजवानी के काम करते हैं। इसीलिए मुझे लोग डिस्को चीफ मिनिस्टर कहते हैं। यह मैं नहीं कह रहा हूं।

प्रो० सैफुद्दीन सोज : यहां पर डिस्कशन किस चीज पर हो रही है और आप उसको कहां ले जा रहे हैं।

پروفیسر سیف الدین سوز : یہاں پر ڈسکشن کس چیز پر ہو رہی ہے اور آپ اس کو کہاں لے جا رہے ہیں۔؟

श्री आरिफ मोहम्मद खां : मैं सोज साहब से निवेदन करूंगा.....(व्यवधान)

प्रो० सैफुद्दीन सोज : आप मेहरबानी करके कानून को कुछ पढ़ने की कोशिश कीजिए। आप जो कुछ कह रहे हैं उसका इस विषय से कोई रैलेवैंस नहीं है। आप जम्मू काश्मीर का कांस्टीट्यूशन ही देख लीजिए। यदि उस पर डिस्कशन करते हुए ऐसी बातें कही जा सकती हैं तो हमें भी ऐसा कहने का मौका मिलना चाहिए, मैं भी वैसी बातें करूंगा.....(व्यवधान)

सभापति महोदया (डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी) : अच्छा ठीक है, बैठ जाइये।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : यदि मैंने कोई आरोप लगाये हों तो आप निशानदेही कर दीजिए, मैं माफी मांग लूंगा।

PROF. MADHU DANDAVATE : I want to know from the hon. Minister whether roaming about with the artists is an anti-national act ?

MR. CHAIRMAN (Dr. Rajendra Kumari Bajpai) : He is not saying that it is an anti-national act. He is saying that he was doing all these things.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : That is not relevant.

SHRI HARIKESH BAHADUR : What other leaders are doing in this country—we know many things.

پروفیسر سیف الدین سوز : آپ مہربانی کر کے قانون کو کچھ پڑھنے کی کوشش کیجئے، آپ جو کچھ کہہ رہے ہیں اس کا اس وشے میں کوئی ریلیونس نہیں ہے، آپ جموں کشمیر کا کانسٹی چیوشن ہی دیکھ لیجئے یدی اس پر ڈسکشن کرتے ہوئے ایسی باتیں کہی جا سکتی ہیں تو ہمیں بھی ایسا کہنے کا موقع ملنا چاہیئے میں بھی ویسی بات کروں گا۔

सभापति महोदया : अब आप दूसरे पायंट पर आइए।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : अब मैं उसको इलैबोरेट नहीं करूंगा।

आफताब अखबार में छपने वाले सम्पादकीय में मुख्य मंत्री को यह परामर्श दिया गया है कि आप स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ ध्यान दीजिये। उस संदर्भ में मैंने यह बात कही, वर्ना जैसा कि मैंने पहले कहा है, मुझे उसमें बिल्कुल दिलचस्पी नहीं है।

प्रो० सैफुद्दीन सोज : उसी अखबार के 3 जुलाई और 4 जुलाई के एडीटोरियल भी पढ़ कर सुनाइए। उसने कहा है कि हिन्दुस्तान में जम्हूरियत का कत्ल हो गया है और एक निहायत हरदिल-अजीज चीफ मिनिस्टर को बरखास्त कर दिया गया है।

پروفیسر سیف الدین سوز : اسی اخبار کے ۳ جولائی اور ۴ جولائی کے ایڈیٹوریل بھی پڑھ کر سنائیے، اس نے کہا ہے کہ ہندوستان میں جمہوریت کا قتل ہو گیا ہے اور ایک نہایت ہر دلعزیز چیف منسٹر کو برخاست کر دیا گیا ہے۔

(व्यवधान)

सभापति महोदय : मैं आनरेबल मेम्बर्स से दरख्वास्त करूंगी कि वे आरिफ साहब को को बोलने दें। बाद में उनको वक्त मिलेगा, तब वे इन बातों को एक्सप्लेन कर दें। आप बीच में न बोलिए। आप बार-बार बोलते हैं, यह बहुत गलत है।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : अब मैं उन बातों की तरफ आता हूं, जिन पर मुझे एतराज है। अभी कांग्रेस के आफिशल आर्गन की बात हो रही थी। जिस नेशनल कांफ्रेंस के नेता फारूक अब्दुल्ला हैं, उनका आफिशल आर्गन है नवाए सुबह। इसमें हैडिंग है "नेशनल कांफ्रेंस की कामयाबी आपके कौमी तशख्खुस की जामिन है।

This is in Urdu. I may be allowed to translate it in English :

"The success of National Conference alone can ensure your national entity.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : It is absolute distortion.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : अगर कोई उर्दू जानने वाला इस उर्दू के हैडिंग का कोई दूसरा अनुवाद कर दे, तो मैं बड़ी से बड़ी सजा भुगतने के लिये तैयार हूं।

डा० सैफुद्दीन सोज : मैं बताऊंगा।

پروفیسر سیف الدین سوز : میں بتاؤں گا

श्री आरिफ मोहम्मद खां : कौमी तशख्खुस कहते हैं नेशनल पर्सनेलिटी को। काश्मीर नेशनल पर्सनेलिटी नहीं है काश्मीर हिन्दुस्तान का हिस्सा है।

डा० सैफुद्दीन सोज : जरूर है।

پروفیسر سیف الدین سوز : ضرور ہے۔

श्री आरिफ मोहम्मद खां : हिन्दुस्तानी नेशनलिज्म हैं और काश्मीर हिन्दुस्तानी कौम का हिस्सा है।

एक माननीय सदस्य : आर्टिकल 370।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : आर्टिकल 370 भी नेशनल पर्सनेलिटी की बात नहीं करता। आर्टिकल 370 केवल ज्यादा स्वायतता और ज्यादा आटानामी देता है।

लेकिन सिर्फ कश्मीर का ही सवाल नहीं है। हमारे संविधान में कई और एरियाज के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : और कोई नहीं है।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : अगर आपको पता न हो, तो छोटा नागपुर है, विदर्भ है।

I am not talking of article 370. I am only talking about the special provisions made in the Constitution about certain specific areas.

उन एरियाज के विशेष हालात को देखते हुए विशेष प्रावधान किए गए हैं।

PROF MADHU DANDAVATE (Rajapur) ; It only means Kashmir is a national personality and not anti-national personality. That is all.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : इनकी सारी समस्या यही है कि श्रीमती गांधी के विरोध का ऐसा चश्मा इन्होंने लगाया है कि अगर कहीं राष्ट्रविरोधी हरकतें भी हो रही हों, तो वे भी इनको नजर नहीं आती हैं। अगर इन्हें लगता है कि अमुक व्यक्ति श्रीमती इन्दिरा गांधी का विरोधी है, भले ही वह राष्ट्र-विरोधी ही, तो ये उसका भी समर्थन करने के लिए तैयार हैं। इसका मेरे पास कोई इलाज नहीं है।

[श्री आरिफ मौहम्मद खां]

माननीय श्री वाजपेयी सिर हिला रहे हैं। मैं उनका बड़ा सम्मान और इज्जत करता हूं। वह बहुत सक्षम वक्ता हैं और मैं हमेशा कोशिश करता हूं कि कुछ थोड़ा बहुत उनसे सीख सकूं। एक दिन मैं इस सदन में था। कोई यह न कह दे कि यह कैसे रेलिवेट है। मैं इस संदर्भ में बात कह रहा हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : वह काश्मीर पर नहीं, मुझपर बोल रहे हैं।

श्री आरिफ मौहम्मद खां : आप स्वागत करेंगे। आप हमेशा बड़े दयालु हैं इस मामले में।

जब माननीय प्रधान मंत्री जी ने इस सदन में आ कर इत्तिला दी कि पहला भारतवासी अंतरिक्ष में पहुंच गया है, तो पूरे सदन ने मेजें थपथपा कर उस खबर का स्वागत किया। श्री बाजपेयी भी इस सदन में मौजूद थे। लेकिन बाद में वह कानपुर पहुंचे। कानपुर में यह जन-सभा के सामने भाषण दे रहे से। मेरा चुनाव क्षेत्र है वहां पर श्री वाजपेयी ने कहा :

श्री राकेश शर्मा को अन्तरिक्ष में भेजने से कोई लाभ नहीं हुआ। इस से रूस को जरूर लाभ हुआ।....

यह किसी छोटे-मोटे अखबार में नहीं निकला है, दैनिक जागरण में है जो हिन्दुस्तान के बड़े अखबारों में एक अखबार है और आप की फोटो भी है। आप उससे नाराज नहीं होंगे। आप ने कहा :

"इस से रूस का ज्यादा प्रचार हुआ। आज आवश्यकता है कि राकेश शर्मा को अन्तरिक्ष में न भेज कर सेवा योजना कार्यालय में चक्कर काटने वाले राकेश शर्मा को रोजगार उपलब्ध

यह मैं नहीं कह रहा हूं। यह दैनिक जागरण कह रहा है। आपकी अनुमति होगी तो मैं इसे सदन के पटल पर रखूंगा।

सभापति महोदया : आप काश्मीर पर बोलिए।

श्री आरिफ मौहम्मद खां : मेरा यह बताने का उद्देश्य केवल इतना ही था कि हमारे विपक्ष में बैठने वाले माननीय सदस्य बड़े विद्वान हैं, बहुत ज्ञानी हैं, सब बातों को जानते हैं, लेकिन विपक्ष में बैठने का धर्म यह मानते हैं कि हर बात को जिस में कहीं सरकार का विरोध होता हो उसको समर्थन दिया जाय और इस बात का देखने की चेष्टा नहीं करेंगे कि कहीं इससे राष्ट्र हितों का तो विरोध नहीं हो रहा है। यह कोई नयी बात नहीं है। महाभारत की लड़ाई में यही जवाब भीष्म पितामह ने दिया है। वह जानते थे कि सच्चाई क्या है लेकिन कौरवों के साथ रहने पर मजबूर थे। आप की भी मजबूरी है। आप जानते हैं कि सक्चाई क्या है लेकिन आप कौरवों के साथ रहने पर मजबूर हैं। इसलिए आप अपना विपक्ष का धर्म निर्वाह कर रहे हैं। मुझे कोई एतराज नहीं है।

मैं तो विशेषतः उन बातों की तरफ आना चाहता हूं जिन पर मुझे एतराज है। जैसे मैंने अभी बताया यह कहा नेशनल कान्फ्रेंस को काश्मीर का तशख्बुस-यानी काश्मीरियों में अलाहदगी की भावना पैदा करना, काश्मीरियों को यह कहना कि तुम्हारी नेशनल आइडेंटिटी है, यह प्रचार करना—यह प्रचार बड़े सुनियोजित ढंग से नेशनल कान्फ्रेंस के जरिए काश्मीर में किया गया। मैं इसमें कोई मोटिव या नीयत की बात नहीं कहना चाहता कि नीयत कहीं खराब है, लेकिन बदकिस्मती से लोगों में कहीं यह धारणा है, अभी चित्त बसु जी जब बोल रहे थे तो उन्होंने आखीरी सेन्टेंस में यह

"It will strengthen the democratic and secular forces in Jammu and Kashmir and it will strengthen the democratic and secular forces in India."

तो इन्डिया और जम्मू कश्मीर अलग-अलग नहीं हैं।

SHRI CHITTA BASU : What is wrong in it ?

श्री आरिफ मौहम्मद खां ; वह इसीलिए कहा, में कोई मोटिव इम्प्यूट नहीं कर रहा हूं मैं उस जुमले को बढ़ा ही देता हूं जो माननीय चित्त बसु जी ने कहा। मैं पहले ही कह चुका हूं कि उनकी नीयत पर में सुबहा नहीं कर रहा हूं। लेकिन मैं यह कहता हूं कि नेशनल कान्फ्रेंस वाले यह माहौल पैदा करने में कामयाब हुए हैं कि सब-कांशसली और अनकांशसली आदमी उस प्रोपेगंडे का शिकार हो जाता है जो प्रोपेगंडा उन्होंने किया है जिस के नतीजे में चित्त बसु जी जैसे प्रोगेसिव, लेफ्टिस्ट और सोशलिस्ट, हिन्दुस्तान की इंटीग्रिटी और यूनिटी के हामी, उन के मुंह से भी एकाध शब्द शायद अनकांशसली निकल गया :

"That will be a bridge between the secular and democratic forces of India and the secular and democratic forces of Jammu and Kashmir."

PROF. MADHU DANDAVATE : Only a grammatical mistake.

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN : If he had said, "it will be a bridge between the secular and democratic forces of Jammu and Kashmir and the rest of India", I can understand that; I can appreciate that.

PROF. MADHU DANDAVATE : That is what he means.

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN :

मैं आप पर बिलकुल सुबहा नहीं कर रहा हूं और उसी मामले को और आगे बढ़ा कर उसी मामले को और आगे बढ़ाया गया। यह सोज साहब की पार्टी का "नवाय-सुबह" आफिशियल आर्गन है।

श्री पी० वी० नरसिंह राव : यह सोज साहब का साज है।

श्री आरिफ मौहम्मद खां : माननीय गृह मंत्री जी ने ठीक फरमाया कि यह सोज साहब का साज है।

प्रो सैफुद्दीन सोज : हो सकता है, आपको हिदायत के रास्ते पर ला दे।

پروفیسر سیف الدین سوز : ہو سکتا ہے آپ کو ہدایت کے راستے پر لادے۔

श्री आरिफ मौहम्मद खां : आप तीन सदस्य थे, मैं समझता हूं कि दो हिदायत की राह पर आ गए हैं। आप एक रह गए हैं।

कांग्रेस-आई का नेशनल कांफ्रेंस का राजनीतिक झगड़ा हो सकता है। राजनीतिक विरोध हो सकता है, लेकिन इस अखबार में सबसे बड़ा कॉलम है-कांग्रेस आई ने काश्मीर में पैर जमाया तो आवाम पर पंजाब जैसे मजालिम तोड़े जायेंगे। यहां फारूख साहब कह रहे हैं, उस मीटिंग में जहा सरदार प्रकाश सिंह बादल मौजूद हैं, जहां तलवण्डी साहब मौजूद हैं, जहां टोहरा साहब मौजूद हैं, जहां पर बीबी राजेन्द्र कौर जी मौजूद हैं। ऐसे मौके पर, जब इन्हीं नेताओं के नेतृत्व में चलने वाला पंजाब में आंदोलन, बेबस और निहत्थे मासूम लोगों की जानें ले रहा था, उनके बीच में ऐसी सभा में जहां ये नेता मौजूद हों, वहां फारूख साहब कहते हैं-अगर कांग्रेस-आई ने काश्मीर में पैर जमाया तो पंजाब जैसे मजालिम आवाम पर काश्मीर पर तोड़े जायेंगे। मैं आपके माध्यम से माननीय सभापति जी,

[श्री आरिफ मौहमम्द खां]

जानना चाहता हूं कि वे क्या मजालिम थे जो जो सरकार ने पंजाब में तोड़े ? क्या जुल्म हैं, जो सरकार ने किया है ? पंजाब में उन्हीं लोगों के जरिए से जुल्म किए गए, जिनके बीच में खड़े होकर फारूख साहब यह बात कहते हैं। माननीय सभापति जी, मैं सरकार की तरफ से नहीं अगला जुमला कह रहा हूं, मैं अपनी निजी हैसियत से कह रहा हूं। आज से नहीं, बहुत दिनों से मेरा मत है कि आज तो फारूख साहब की सरकार के अपने गुनाहों के कारण, चूंकि उन के अपने सदस्यों में, अपनी पार्टी में, फूट पड़ गई, उनके पास पास बहुमत नहीं रहा, उसके कारण मजबूर हो कर काश्मीर के गवर्नर के पास कोई दूसरा तरीका नहीं रह गया था सिवाय उस सरकार को डिसमिस करने का। लेकिन हकीकत यह है कि जिस प्रकार से राष्ट्र विरोधी, भारत विरोधी, तत्वों को संरक्षण दिया गया; जिस प्रकार हिंसा में लगे हुए लिप्त लोगों को काश्मीर के अन्दर ट्रेनिंग दी गई, जिस तरह से पंजाब में एक्शन होने के बाद आतंकवादियों के खिलाफ कार्यवाही करने के बाद कश्मीर की घाटी में वहां रहने वाले अल्पसंख्यकों के घरों को, उनकी इबादत गाहों को जलाया गया, जिस तरह से उनके घरों में रात को आग लगाई गई, यह सरकार इस बात की अधिकारी थी कि इसको आज से नहीं बहुत दिन पहले डिसमिस किया जाना चाहिए था।

मेरा निश्चित मत है कि अगर इस प्रकार इस सरकार को कुछ दिन और रहने दिया गया होता, अगर यह सरकार कुछ और चल गई होती, अपना बहुमत खोने के आरोप में नहीं, बल्कि उन कामों के आरोप में, उन हरकतों के आरोप में जो हरकतें वहां पर की गई, उसके आरोप में इस सरकार को डिसमिस किया जाना चाहिए था।

माननीय सभापति जी, मैं आपके माध्यम से प्रो० सोज साहब से जानना चाहूंगा, इत्तिफाक से वे अकेले अधिकारी हैं ...

प्रो० सैफुद्दीन सोज : मैं अकेला कहां हूं, सारा अंजुमन है।

پروفیسر سیف الدین سوز : میں اکیلا کہاں ہوں، سارا انجمن ہے۔

श्री मूलचन्द डागा : दो और कहां गए हैं।

श्री आरिफ मौहम्मद खां : इसलिए कि वे इत्तिफाक से अपने दल के अकेले अधिकारी प्रवक्ता हैं। गैर अधिकारी प्रवक्ता तो इस सदन में अच्छे-खासे मिल जायेंगे, लेकिन अधिकार रूप से वे ही जवाब दे सकेंगे। इसलिए मैं जानना चाहूंगा, 6-7 जून को श्रीनगर में कितने घरों में आग लगाई गई ? मैं खास तौर से 6-7 जून की बात कर रहा हूं। उस हफ्ते में अमृतसर में एक्शन होने के बाद जो आतंकवादी वहां पनाह पा रहे थे, उन्होंने जब जलूस निकाला तो उनके साथ खालिस्तान का नारा लगाने वाले और पाकिस्तान जिन्दाबाद का नारा लगाने वाले कौन थे ? मैं यह भी जानना चाहूंगा कि क्या वहीं पर श्रीनगर के अन्दर आर्यसमाज मंदिर के अन्दर आग लगाई गई ? यह भी 6-7 जून का ही किस्सा है।

एक माननीय सदस्य : यह वाजपेयी जी को पता होगा।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : वाजपेयी जी को उसमें दिलचस्पी नहीं। वाजपेयी जी को दिलचस्पी तब होती है, जब प्रधान मंत्री जी के विरोध में बात जाती हो।

श्रीनगर शहर के अन्दर कितनी इमारतों पर, खालिस्तान लिखा हुआ, खालिस्तान का

झण्डा लहराया गया और कितने समय तक वह झण्डा वहां लहराता रहा, सरकार की तरफ से या एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ से उनको उतारने की कोशिश नहीं की गई।

80 साल की उम्र का एक नान-काश्मीरी साधु जो पिछले 15-20 सालों से वहीं शहर के नजदीक एक जगह पर तपस्या कर रहा था, उस की हत्या कर दी गई। काश्मीरी जुबान में साधु को ऋषि कहते हैं और इसका कांसेप्ट है-आपस में मुहब्बत, भाई-चारा। साधु और ऋषि को मानने वाले हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं, ठीक इसी तरह से इस साधु के पास जाने वाले हिन्दू और मुसलमान दोनों थे। लेकिन उस को एक खास रंग देकर उसी दिन उस साधु की हत्या कर दी गई।

जम्मू डिवीजन में नानक नगर और पुंछ में···

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जम्मू शहरों में।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : मैं खाली जम्मू शहर की बात नही कह रहा हूं, डिवीजन की बात कर रहा हूं, जिस में पुंछ भी है, वहां पर बाकायदा इमारतों पर बोर्ड लगाए-जिन में लिखा गया-सिफारतखाना पाकिस्तान, सिफारतखाना खालिस्तान, सिफारतखाना यूनाइटेड स्टेट्स आफ अमरीका। कितने दिनों तक ये बोर्ड उन इमारतों पर लगे रहे, कितने दिनों तक यह इम्प्रेशन दिया गया कि यहां से पाकिस्तान, खालिस्तान और यूनाइटेड स्टेट्स आफ अमरीका के दूतावास कार्य कर रहे हैं ?

सभापति महोदय, ऐसी एक नहीं अनेक घटनाओं का जिक्र अखबारों में आता रहा है, मैंने उन एक का भी उद्धरण यहां नहीं सुनाया, वे घटनायें अपने आप में इतनी काफी थीं इस बात को साबित करने के लिए कि फारूख साहब न केवल ऐसे राष्ट्र विरोधी, भारत विरोधी तत्वों को संरक्षण दे रहे थे, बल्कि भारत के खिलाफ एक बहुत बड़ा प्रोपेगण्डा करने में लगे हुए थे, जिस से अलगाववादी भावना को ज्यादा से ज्यादा ताकत दे सकें।

यहां पर कांग्रेस (आई) लीडर्स के बारे में बहुत कुछ गया-जैसे-हम चैन से नहीं बैठेंगे जब तक इस सरकार को हटा नहीं देते। मैं यह कहना चाहता हूं-यह कोई हमारे कहने की बात नहीं थी, हम ने तो आरोप ही लगाया था कि नेशनल कान्फरेंस ने ईमान्दारी से चुन कर सरकार नहीं बनाई हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि वहां पर हिंसा का वातावरण बनाया गया, जिस तरह से सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया गया, वह अपने आप में एक ऐसी मिसाल है जो दूसरी जगह नहीं मिल सकती। लेकिन अगर आप इजाजत दें—

(MR. DEPUTY SPEAKER in the chair)

उपाध्यक्ष महोदय, तो मैं एक ऐसे अखबार से, जो कांग्रेस-विरोधी अखबार है और लिखने वाला एक ऐसा आदमी है जो फारूख साहब समर्थक रहा है, जिस ने कई लेखों में उन का समर्थन किया है-एक उद्धरण पढ़ना चाहता हूं। यह 26 जनवरी, 1984 का इण्डियन-एक्सप्रेस हैं, और श्री एच० के० दूआ का लेख हैं, जो कांग्रेस (आई) समर्थक नहीं कहे जा सकते ···

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : He is an objective journalist.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : श्री सुब्रण्यम् स्वामी की राय में वह आब्जैक्टिव जर्नलिस्ट हैं। उन्होंने लिखा है—

"The National Conference rigged the election in several Constituencies. It

[श्री आरिफ मोहम्मद खां]

did not have to, Mr. Farooq Abdullah would still have a comfortable majority and form the Government. The Maulvi-Farooq alliance which in the State politics is known as 'Sher-Bakri alliance is an eye-sore for the Centre. The Maulvi has not accepted the State's accession to India."

श्री हरिकेश बहादुर : (गोरखपुर) प्रधान मंत्री, हमेशा उन को बुला-बुला कर बात करती रही हैं।

(व्यवधान)

श्री आरिफ मोहम्मद खां : उपाध्यक्ष जी, श्री हरिकेश बहादुर जो परेशान हैं, वह मैं समझ सकता हूं। इसलिए कि अभी एक ऐसा तथ्य जो इस देश के लोगों की जानकारी में नहीं आया था, वह यह है कि भिंडरवाला और फारूख अब्दुल्ला के बीच में जो आदमी उन के लिंक का काम कर रहा था, जिस ने उन्हें मिलवाया था, वह भिंडरावाला का विश्वस्त था और श्री हरिकेश बहादुर की पार्टी का सदस्य था, शाह वेग सिंह।

···(व्यवधान)···

मैं नहीं कह रहा हूं। शाह वेग सिंह ने अपने इन्टरव्यू में कहा है और यह दिल्ली से निकलने वाला अखबार है, "बीसवीं सदी।

SHRI HARIKESH BAHADUR : Sir, there is no member in our party called Shahbeg Singh. This is a baseless allegation. It is a serious allegation.

(*Interruptions*)

They are planting such people.

(*Interruptions*)

I deny this charge with all the force at my command.

MR. DEPUTY SPEAKER ; You will be given a chance and at that time you put forward your view point.

(*Interruptions*)

श्री आरिफ मोहम्मद खां : माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं हरिकेश भाई की बहुत इज्जत करता हूं। मेरा उन के ऊपर कोई निजी आरोप नहीं है। यह आरोप भी नहीं है। मैं तो केवल दिल्ली से छपने वाले एक मासिक पत्र, जो उर्दू का लिटरेरी और पालीटीकल, सब से बड़ा अखबार हिन्दुस्तान का है "बीसवीं सदी" जिस का सर्कूलेशन एक लाख से भी ज्यादा है, जो हिन्दुस्तान के हर हिस्से में जाता है। उस में दिल्ली के उर्दू के बहुत ही सीनियर जर्नलिस्ट नाज अंसारी का इन्टरव्यू है जो उन्होंने संत हरचन्द सिंह लोंगोवाल और भिंडरावाला से लिया है और उस इन्टरव्यू को दिलवाने में शाह वेग सिंह ने मदद की है शाह वेग सिंह उन के साथ गये थे और शाह वेग सिंह ने नाज अंसारी से कहा है जब उन से पूछा गया कि क्या आप किसी राजनीतिक पार्टी के सदस्य हैं, तो नाज अंसारी ने 'बीसवीं सदी" में यह लिखा है कि शाह वेग सिंह ने यह कहा है कि मैं बहुगुणा साहब की डी० एस० पी० का मेम्बर हूं।

···(व्यवधान)···

श्री हरिकेश बहादुर : ये सब इन के आदमी हैं, जोकि दूसरों की इमेज मैलाइन कर रहे हैं।

(*interruptions*)

MR. DEPUTY SPEAKER : What would you like to say, Mr. Harikesh Bahadur ?

श्री हरिकेश बहादुर : मैं इन को बताना चाहता हूं कि हमारी पार्टी में शाह वेग सिंह नाम का कोई सदस्य नहीं है और इस तरह

के जो एजेन्ट आप लोग जगह-जगह पर प्लान्ट कर रहे हैं दूसरी पार्टियों के ऊपर इस तहर से गलत प्रचार करने के लिए और उन के ऊपर प्रहार करने के लिए, आप ऐसी हरकतों को बन्द कीजिए। वास्तविकता यह है कि इस देश के टुकड़े करने के लिए कांग्रेस पार्टी के नेताओं द्वारा जो राजनीति खेली जा रही है, वह बहुत खतरनाक है।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : उपाध्यक्ष जी, इन के साथ मेरी सहानुभूति है लेकिन मुझे विश्वास है कि बहुगुणा जी की क्षमता से ये खुद भी परिचित हैं और यह जानते हैं कि वे हर काम इन से पूछ कर नहीं करते हैं।

...(व्यवधान)...

श्री हरिकेश बहादुर : इन्दिरा जी क्या आपसे पूछ कर हर काम करती हैं।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : श्रीमन्, मैंने पहले कहा हैं कि यह कोई कांग्रेस समर्थक अखबार नहीं है। आम तौर पर कांग्रेस के खिलाफ ही इसमें छपता है और ऐसे जर्नलिस्ट का यह इन्टरव्यू है। यह बात उसी सिलसिले में निकली, तो मैंने कह दी। आप को बुरा नहीं मानना चाहिए और अगर बात गलत है, तो कान्ट्रडिक्शन अखबार में भेजना चाहिए।

श्री हरिकेश बहादुर : यह कौन सा अखबार है ?

श्री आरिफ मोहम्मद खां : यह 'बीसवीं सदी' अखबार है।

उपाध्यक्ष महोदय, आज से कई महीने पहले की बात है और सी० सी० आई० (एम) के माननीय सदस्य श्री बाला नन्दन ने उस को लेकर यहां पर बात कही थी। उन्होंने कहा था कि मेरे एक सहयोग मंत्री मंडल के सदस्य श्री गुलाम नबी आजाद और मैं उस प्रतिनिधि मंडल में शामिल थे, जिसमें काश्मीर के हमारे कुछ और सहयोगी भी थे। और हम राष्ट्रपति जी से जाकर मिले थे। राष्ट्रपति जी को हम लोगों ने अपना ज्ञापन दिया था। उस ज्ञापन में हमने यही शिकायत की थी कि आज कश्मीर वैली के अन्दर भारत-विरोधी, राष्ट्र-विरोधी तत्व सक्रिय हैं। उनको सरकारी संरक्षण दिया रहा है, उनको सम्मानजनक स्थिति दी जा रही हैं और उनको यहां तक सम्मान मिल रहा जबकि वे देश की एकता और अखंडता के लिए खतरा बन जाएंगे। उस ज्ञापन के बाद माननीय राष्ट्रपति जी ने भारत सरकार से पूछा और भारत सरकार ने कश्मीर सरकार से पूछा। मुजै आज तक याद है कि जब भारूख अब्दुल्ला से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि "No secessionist activity in Jammu & Kashmir".

(व्यवधान)

कर्नाटक का जब मौका आयेगा तब उसको भी डिस्कस करेंगे। उसका भी इंतजार कीजिए। माननीय उपाध्यक्ष जी, यहां कर्नाटक के बारे में कोई मोशन नहीं है, इसलिए उसको कैसे डिस्कस किया जा सकता है

(व्यवधान)

When we will come to that, we will discuss it.

मुझे उम्मीद है कि मधु दंडवते जी इस चीज को उसी ह्यूमरस वे में लेंगे। जिस तरह ह्यूमरस वे में लेने के लिए वे ब्रह्मानन्द रेड्डी जी को कह रहे थे।

माननीय उपाध्यक्ष जी, फारूख अब्दुल्ला जी ने असेम्बली के अन्दर भी यह कहा था। जब भारत सरकार के गृह मंत्री ने पहली अप्रैल को उन्हें पत्र लिखा था, यह उसी दिन की बात

[श्री आरिफ मोहम्मद खां]

है। गृह मंत्री जी ने पत्र लिख कर यह जिता व्यक्त की थी कि कश्मीर में राष्ट्र-विरोधी तत्व सक्रिय हैं।

उस ज्ञापन को देने के बाद जब भारत सरकार की तरफ से थोड़ा-सा सख्त रवैया अपनाया गया और क्रिकेट मैच के मौके पर जो "पाकिस्तान जिंदाबाद" के नारे लगाये गये, के बारे में बताया गया और कहा कि ऐसी बातों को अब बर्दाश्त नहीं किया जायेगा तो उसके बाद एक दिन नहीं बल्कि कई दिनों तक गिरफ्तारियां होती रहीं और यह कहा गया कि एक्सट्रीमिस्ट्स और सेसेसनिस्ट्स को गिरफ्तार किया जा रहा है। मेरे कहने का मतलब यह है कि दो फरवरी को जब कोई एक्सट्रीमिस्ट और सेसेसनिस्ट नहीं था तो दस दिन के बाद किन लोगों को गिरफ्तार किया गया। अगर वह ज्ञापन हम राष्ट्रपति जी को नहीं देते जिसकी ओर भारत सरकार ने मुख्य मंत्री का ध्यान खींचा था तो ये कार्यवाहियां इसी तरह से वहां जारी रहती जिनसे कि आने वाले दिनों में देश की एकता और अखंडता को खतरा बन जाता।

यह जो Telegraph अखबार है, यह कांग्रेस समर्थक अखबार नहीं है। इसमें लिखा है—

> "Till yesterday over 150 member of Pakistanis and extremist elements had been arrested mostly under the Public Safety Act. The Awami Party head, led by Mr. Moulvi Farooq was left untouched."

यह खास तौर से ध्यान देने की बात है और केन्द्रीय सरकार का ध्यान दिलाने की बात है कि प्रो-पाकिस्तानी और सेसेसनिस्ट एलीमेंट्स के खिलाफ कश्मीर सरकार कार्यवाही कर रही है। प्रो-पाकिस्तानी और सेसेसनिस्ट दो-ढाई-सौ लोगों को बंद भी किया गया लेकिन मौलवी फारूख और उनके किसी भी आदमी को हाथ नहीं लगाया गया। अब मौलवी फारूख क्या हैं, इसके बारे में सभी माननीय सदस्य अच्छी तरह से जानते हैं, उनके बारे में में भी कह चुका हूं। अभी दो-चार दिन पहले सोज साहब ने जो कहा, उसकी तरफ मैं नहीं जा रहा हूं लेकिन यह सही है कि उन्होंने अपनी नेशनेलिटी बताने से इन्कार कर दिया था। जब उनसे पूछा गया कि आप हिन्दुस्तानी हैं तो उन्होंने कहा कि मैं यह नहीं बताऊंगा। यह खबर टाइम्स आफ इण्डिया में छप चुकी है।

अभी एक माननीय सदस्य ने मुझे बताया कि उन्होंने अपने आपको हिन्दुस्तानी मान लिया है। मुझे बहुत खुशी है कि सुबह का भूला शाम को घर आ गया तो भी वह भूला नहीं कहलाता।

MR. DEPUTY SPEAKER : Prof. Soz is always in India. I am supporting you Prof. Soz.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : अभी तीन महीने पहले का इंटरव्यू है। सौ दिन पुराना है। मौलवी फारूख साहब ने बंबई से निकलने वाले अखबार को दिया है।

श्री मधु दण्डवते : बंबई को क्यों खराब करते हो।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : "सण्डे आब्जर्वर" अब मेरे ख्याल से स्वामी जी कहेंगे कि आब्जेक्टिव है। दण्डवते साहब का मुझे नहीं मालूम।

श्री मधु दण्डवते : कल का आब्जर्वर पढ़ा ?

श्री आरिफ मोहम्मद खां : जो चर्चा हो रही है, उसको सामने रखकर ही तो बात होगी। आप इससे आगे जाना चाहें तो इसमें मुझे एतराज नहीं है :

अखबार के प्रतिनिधि ने पूछा—

"Was it true that at an election meeting, he has raised the issue of plebiscite again ?" He replied, "I did not say, I will launch an agitation.

I only revealed the background to the issue that it was one of the promises to the people made by Kashmir.." What I am going to read is all the more significant. He further said, "Is there not a Simla Agreement ?" He is talking of Simla Agreement in Kashmir context.

India has a *locus standi* ; Pakistan has; and so do the people of Kashmir. "But does he not see Kashmiri Muslims as Indian Citizens ?". He smiled, his eye-brows slightly arching behind his dark glasses. I took it for an answer." Do you agree with that ?

श्री सैफुद्दीन सोज : यह आप मुझ से पूछ रहे हैं ?

پروفیسر سیف الدین سوز : یہ آپ مجھ سے پوچھ رہے ہیں ؟

श्री आरिफ मोहम्मद खां : चुनाव इनके साथ मिलकर लड़ेंगे आंदोलन इनके साथ मिलकर चलाएंगे । उनके भारतीय होने का और मेन स्ट्रीम में आने का सर्टिफिकेट ये देंगे, तो सवाल इनसे नहीं पूछूंगा तो किससे पूछूंगा ?

DR. SUBRAMANIAM SWAMY (Bombay North East) : May I ask you a question ? If this question is not under dispute, why do you allow UN observers to be present in Kashmir ? Why don't you have them withdrawn ?

श्री आरिफ मोहम्मद खां : मैं इसका जवाब नहीं दूंगा । इस पूरे विषय पर गृह मंत्री जवाब देंगे ।

PROF, MADHU DANDAVATE : All the difficult questions are left to him.

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN : Naturally. He is my senior.

PROF. MADHU DANDAVATE : He should not say that he would be leaving it to the Prime Minister.

MR. DEPUTY SPEAKER : It is their joint responsibility.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : माननीय उपाध्यक्ष जी, यह मामला जैसा मैंने पहले कहा कि यह मामला केवल कश्मीर में अलगाववादी, हिंसा करने वाले, राष्ट्र विरोधी तत्वों को संरक्षण देने तक ही सीमित नहीं था, यहां एक हिन्दुस्तान के काफी मशहूर जरनलिस्ट ने लिखा है, उनका लिखा हुआ जो बिटविन दी लाइन्स कालम आता है, उसका हैंडिग है "फारुख अब्दुल्ला का प्रस्ताव ।" इन्दिराजी कहें तो मैं अकालियों के साथ समझौता करा सकता हूं । अब मुझे पता नहीं कि वाजपेयी जी ने, दण्डवते जी ने सारी मित्रता के बावजूद जो अकालियों के साथ है, किसी दिन यह दावा किया कि हम समझौता करा सकते हैं । बल्कि यह जरूर कहा कि हम पूरा प्रयास करेंगे, उसमें शामिल हुए, लेकिन फारुख अब्दुल्ला साहब ने अधिकारिक रूप से कहा कि अगर इन्दिराजी मुझसे कह दें तो मैं अकालियों के साथ समझौता करा सकता हूं ।

निश्चित ही अकालियों से इनका संबंध था । खास-तौर से इसलिए कह रहा हूं कि एक माननीय सदस्य ने कहा है कि काश्मीर में गुरमत ट्रेनिंग कैम्प लगाए गये तो इतनी ज्यादा आपत्ति बिहार, हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश में लगाये गये तो वहां की सरकारों के खिलाफ क्यों नहीं की जाती ? इसलिए नहीं कि ये ट्रेनिंग कैम्प सरकार की जानकारी और संरक्षण में चलाये गये । काश्मीर गुरमत ट्रेनिंग कैम्प में ट्रेनिंग लेने वाले जो शिक्षार्थी थे. उनका एक समूह माननीय मुख्य मंत्री जी के

[श्री आरिफ मोहम्मद खां]

निवास स्थान पर या आफिस में ले जाया जाता था। वहां पर मुख्य मंत्री बाहर आते थे। उसके बाद उस ड्राइंग रूम में जाते थे जहां मुख्य मंत्री का चित्र भिंडरावाले के चित्र के साथ लगा हुआ था। उसके बाद निकलकर नारे लगाये जाते थे "खालिस्तान जिन्दाबाद" "भिंडरावाला जिंदाबाद", "पाकिस्तान जिंदाबाद"। इन नारों में मुख्य मन्त्री शामिल होते थे। इसलिये उत्तर प्रदेश, हरियाणा या हिमाचल प्रदेश में सरकार को यह जानकारी मिली होती कि इन कैम्पों में हिंसा की ट्रेनिंग दी जा रही है तो निश्चित ही वहां पर कार्यवाही की गई होती। अगर, एतराज करने वालों ने किसी को सूचना दे दी होती तो मैं नहीं समझता कि सरकार फौरी-तौर पर कार्यवाही न करती। फारूक साहब को सूचना दी गई। लेकिन फिर भी, कैम्प उसी तरह से लगते रहे। मेरे पास एक अखबार है, जो रजिस्ट्रार आफ न्यूज-पेपर्स के यहां रजिस्टर्ड नहीं है। यह अखबार फारूक साहब की पार्टी के कार्यालय मजाहिद मंजिल के बाहर बांटा गया। इसका नाम है, "अल-जिहाद"। मैं समझता हूं, माननीय सदस्य, इसका मतलब समझ गए होंगे। ...(व्यवधान)

प्रो० मधु दण्डवते : डिप्टी स्पीकर साहब को इसका मतलब अंग्रेजी में समझाइए।

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN : Yes. Sir, since I am speaking in Urdu, naturally it is difficult for you. *Jehad* means religious war or struggle: and when you put it in Arabic style, it becomes *al Jehad*.

श्री आरिफ मोहम्मद खाँ : पहले तो मैं यह कहना चाहूंगा कि इस अखबार में लोगों को क्या हिदायतें दी गई हैं? "इस संकट की घड़ी में जब फारूक अब्दुल्ला की सरकार को केन्द्रीय सरकार के इशारे पर डिसमिस कर दिया गया है तो कश्मीरियों को क्या करना चाहिये"?

प्रो० सैफुद्दीन सोज : यह अखबार कहां छपता है? (व्यवधान)

پروفیسر سیف الدین سوز : یہ اخبار کہاں چھپتا ہے؟

Sir, he cannot proceed further unless he gives the name of it, and the place from where it is published.

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN : The printer, editor and publisher is Mr. Farooq Abdullah. The publication itself is unauthorized. It is not registered with the Registrar of Newspapers in India.

MR. DEPUTY SPEAKER : He says it is not a registered newspaper.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : From where is it published? At least I have never heard about this newspaper.

PROF. MADHU DANDAVATE : I am on a point of order.

मुझे पता है कि दंडवते साहब अपने प्वाइंट आफ आर्डर में क्या कहना चाहते हैं? यही कहेंगे कि इस अखबार को कोट न करें। ठीक है, मैं कोट नहीं करता मैं उस अखबार को कोट करता हूं, जो दिल्ली से निकलता है। (व्यवधान)

MR. DEPUTY SPEAKER : He need not quote the name of the paper. It is his own speech, even though he is quoting from the paper.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Totally false.

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN : I am now quoting from a newspaper in Urdu registered with the Registrar of Newspapers in India.

MR. DEPUTY SPEAKER : It does not matter from where it is published.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY SPEAKER : Please sit down. Are you yielding ?

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN : I am not yielding. Let me quote first.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : He must say where it is published; he cannot withdraw it. He has mislead this House; he cannot withdraw it.

SHRI SUNIL MAITRA : (Calcutta-North East) You cannot have two standards. Now, he is quoting from some paper. When discussion on Antulay was going on, you were in the Chair.

MR. DEPUTY SPEAKER : Do not quote anything. Your point of order can be raised if there is an infringement of the rules. Which rule has been infringed ? Don't mention the Chair. You should not mention the Chair; you should not involve the Chair. Your point of order itself is not in order. You should not raise your point of order involving the Chair.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY SPEAKER : Unless it is unparliamentary, we have got to permit it in the House.

(*Interruptions*)

PROF. SAIFUDDIN SOZ : He has withdrawn the earlier paper.

(*Interruptions*)

SHRI ARIF MOHAMMAD KHAN : I am quoting from a paper which is published from Delhi, which has given full details.

(*Interruptions*)

Only if you take the trouble of listening to me, you will come to know about my previous statement.

MR. DEPUTY SPEAKER : If he gives like this, it is part of his speech. Why do you worry about it ? He is making his speech here.

(*Interruptions*)

लेकिन उसके बगैर मैं आपको नहीं बता सकता, जब तक आप सुनने के लिये तैयार नहीं होंगे। मैं यहां पहले स्टेटमैंट के बारे में बात कर रहा हूं, श्रीमन्, जिसमें कहा गया है, हिदायतें दी गई है कि केन्द्रीय सरकार की सम्पत्ति को आग लगाई जाए, बम बनाए जाएं और उन मौहल्लों में सप्लाई किये जाएं। उसके आगे यह कहा गया है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी की जन-सभा में जाकर वहां उनके ऊपर बम फैंके जाएं। इसके बाद कहा गया है ··(व्यवधान)

प्रो० सैफुद्दीन सोज : यह दिल्ली का अखबार है, सर, उसमें यह कहां छपा है।

پروفیسر سیف الدین سوز : یہ دلّی کا اخبار ہے، سر! اس میں کہاں چھپا ہے؟

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY SPEAKER : But we have got to allow it.

(*Interruptions*)

PROF. MADHU DANDAVATE : I am on a point of order. Rule 353 reads as follows :

> "No allegation of a defamatory or incriminatory nature shall be made by a member against any person unless the member has given previous intimation to the Speaker and also to the Minister concerned so that the Minister may be able to make an investigation into the matter for the purpose of a reply."

MR. DEPUTY SPEAKER : He has raised a point of order under rule 353. I would go through the record and give my decision. Please sit down. I would go through the record and if there is any allegation, we will expunge it.

*श्री पी० नामग्याल (लद्दाख) : मैं कहना चाहता हूं कि जार्ज फर्नान्डीज साहब ने जब कोट किया था, खिदमत अखबार में से, वह अंग्रेजी में कहीं भी नहीं छपता, बल्कि उर्दू में छपता है, वे कहां से कोटेशन दे सकते थे ...

شری پی نام گیال (لداخ): میں کہنا چاہتا ہوں کہ جارج فرنانڈیز صاحب نے جب کوٹ کیا تھا۔ خدمت اخبار میں سے وہ انگریزی میں کہیں بھی نہیں چھپتا بلکہ اردو میں چھپتا ہے، وہ وہاں سے کوٹیشن دے سکتے تھے۔

(व्यवधान)

श्री आरिफ मोहम्मद खां : सर, मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि इस अखबार में कश्मीर के आवाम को कहा गया है कि वह अपने पास असला जमा करें, हथियार जमा करके रखें। क्योंकि उन्हें जल्द ही मैदान--ए-जंग में उतरना होगा, उन्हें तबीले जिद्दो-जहद करनी होगी, उन्हें जिहाद करनी होगी। यह बात इसमें साफ तौर पर कही गई है। यह अखबार किस दिन बंटा है. जिस दिन श्रीनगर पुलिस में एक रिपोर्ट लिखवाई गई थी कि कश्मीर के भूतपूर्व मुख्यमंत्री दो दिनों से गायब हो गए हैं। और जिस दिन विपक्ष से सम्बन्ध रखने वाले एक माननीय सदस्य जिनके इतिहास में बम बनाना और पुलों तथा रेलवे लाइनों को उड़ाना है वह भी उसी दिन श्रीनगर में मौजूद थे। बम बनाने का तरीका बताया गया इस अखबार में मुझे बताया गया है कि उनसे ही सलाह मश्विरा करने के बाद बम बनाने की तरकीब इस अखबार में छापी गई। और उसके बाद वह अखबार मुजाहिद मन्जिल, जो नेशनल कांफ्रेंस का हैडक्वार्टर है उसमें जो मीटिंग हुई, उसके बाहर इस अखबार को बटवाया गया। मेरा कहना सिर्फ यही है कि हमें यह देखना पड़ेगा ..

MR. DEPUTY-SPEAKER : Hon. Members, every party has been allowed sometime, the ruling party time is there. Therefore he is taking the ruling party time. I cannot stop him. The ruling party has got two hours and 20 minutes. Other Members from the ruling party may not be called. He is taking their time.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : एक बात और कहना चाहता हूं क्योंकि डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेई ने शेख साहब के लिए कुछ कहा जिसकी फर्नान्डीस जी ने बड़ी अजीब सी तस्वीर बनाई कि आज शेख साहब की तारीफ कर रहे हैं। निश्चय ही हम शेख साहब को राष्ट्रीय नेताओं में से एक मानते हैं। राजनीतिक मतभेद होना, या किसी वक्त समर्थन देना या वापस लेना यह एक अलग बात है। अगर इसी आधार पर किसी का व्यक्तित्व तय होना है कि आप कितनी देर तक राजनीतिक समर्थन देते हैं तो आप लोग बड़े संकट में आ जायेंगे। पता नहीं कौन कितनी देर तक किसके साथ राजनीतिक तौर पर रहा है। इसलिए इस आधार पर किसी का राष्ट्रीय व्यक्तित्व तय नहीं हो सकता। निश्चित ही हम शेख साहब को राष्ट्रीय नेता मानते हैं। हां, आज जो फारूक साहब के बहुत समर्थक बन गए हैं, 1977 में जनता पार्टी के शासन में आने के बाद उस समय की बात यहां की गई हैं, शेख साहब और मिर्जा अफजल बेग की संस्तुति पर प्रदेश असेम्बली को डिजाल्व किया गया, हम तो मानते हैं कि गवर्नर का डिस्क्रीशन है अगर वह चाहता है तो वह असेम्बली को डिजाल्व करे या मम्भव हो सके तो दूसरी

सरकार बनाये। लेकिन इसके साथ-साथ जब चुनाव के सिलसिले में शेख साहब से समझोता करने के लिये जनता पार्टी ने बात की और ब्रोडवे होटल में मीटिंग हुई, शेख साहब को यहां से सूचना दी गई, लेकिन जो अपमानजनक रवैया शेख साहब के साथ जनता पार्टी ने अपनाया वह रवैया वह आखीर वक्त तक नहीं भूले। हम से तो उनका राजनीतिक मतभेद या राजनीतिक समर्थन हो सकता है, लेकिन फारूक साहब का समर्थन करने वाले और अब्दुल्ला का बडे प्यार से नाम लेने वाले लोगों ने उनके लिये जो अपमानजनक रवैया अपनाया था उसकी वजह से शेख साहब ने वहां चाय तक भी नहीं पीयी और मीटिंग से निकल कर चले गये। जनता पार्टी के दूसरे तीसरे नम्बर के मंत्री ने शेख साहब के लिये जिन अल्फाज का इस्तेमाल किया था, जिसको सोज साहब बतायेंगे, जब कि शेख साहब को दिल का दौरा पड़ा हुआ था और वह बिस्तर पर थे, जो अल्फाज उस राष्ट्रीय नेता के लिये उन्होंने दिल के दौरे के वक्त इस्तेमाल किये उनने अपमान-जनक अल्फाज इस्तेमाल करने की कल्पना कांग्रेस का कोई आदमी कर भी नहीं सकता जो कि जनता पार्टी के एक सीनियर मिनिस्टर ने कहे थे। मैं कहना चाहता हूं कश्मीर के तकरीबन सभी लोग, जो मौलवी और फारूक के असर में नहीं, वह सब राष्ट्र भक्त हैं और हिन्दुस्तान और कश्मीर में फर्क नहीं समझते हैं

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अभी कह रहे हैं हिन्दुस्तान और कश्मीर में, इसी पर एतराज कर रहे हैं।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : यही तो कह रहा हूं कि वह फर्क नहीं मानते हैं। वह कश्मीर को उसका अगं मानते हैं। वह दोनों में फर्क नहीं करते हैं। मैं वही कह रहा हूं। उन्होंने तो बहुत अच्छा काम किया। वह यहां तो कहते रहे कि मैं भारतीय हूं और वहां पर अलगाव-वादी ताकतों को बढ़ाते रहे। उन्होंने यहां पर यह इम्प्रेशन दिया कि सब कुछ मेरे साथ तय कीजिए, तो मैं इनको एक रख सकता हूं, अगर मुझे हाथ लगाया, तो काश्मीर आपके हाथ से निकल जाएगा। वह बार-बार यह बात करते रहे।

मेरा उद्देश्य किसी पर आरोप लगाने का हरगिज हरगिज नहीं है। मेरा उद्देश्य विपक्ष के सम्मानित नेताओं से निवेदन करना था। आपके माध्यम से मैं एक बार फिर उनसे दरख्वास्त करना चाहता हूं कि वे एक बार फिर काश्मीर घूम कर आएं। वे फारूक अब्दुल्ला के साथ जाकर लोगों से न मिलें वे उन महल्लों में जाएं, जहां वे लोग रहते हैं, जो राजनैतिक तौर पर नेशनल कान्फ्रेंस का साथ नहीं देते हैं। जरा उनसे मालूम कीजिए कि किस तरह उनके इबादत घरों मे कूड़ा फेंका गया। उन लोगा से मालूम कीजिए कि जब उनके बच्चे, बेटे, बेटियां स्कूल जाते थे, तो किस तरह गुंडों से उनको धमकियां दिलवाई जाती थीं। उन पर जिन्दगी के दरवाजे तंग किए जाते थे।

उनको छोड़िये, शेख अब्दुल्ला की अपनी बेटी, जिसने उस वक्त शेख साहब का साथ दिया, जब वह कठिनाई में थे, जबकि फारूक अब्दुल्ला लन्दन में जिन्दगी के पूरे मजे ले रहे थे—शेख साहब की मुसीबत की साथी, जब उसने राजनैतिक मतभेद जाहिर किया, तो उस पर प्राण-घातक हमला कराने की कोशिश की गई।

क्या यह वास्तविकता नहीं है कि श्री हिस्सामुद्दीन, काश्मीर विधान सभा के मेम्बर, के बारे में यह अफवाह उड़ जाने पर कि उसने फारूक अब्दुल्ला की पार्टी से इस्तीफा दे दिया है, उसके घर को गुंडों के जरिये पत्थरों से भरवा दिया गया ?

[श्री आरिफ मोहम्मद खां]

फारूक अब्दुल्ला की पार्टी की एकता बनाए रखने के लिए सरकारी मशीनरी का इस्तेमाल हो रहा था। अखबारी रिपोर्ट है कि एक-एक एम० एल० ए० के पीछे दस दस सी० आई० डी० के आदमियों की ड्यूटी लगाई गई थी।

आखिर में मैं कहना चाहता हूं कि काश्मीर का मामला कोई एक राज्य का मामला नहीं है। काश्मीर का मामला भारत की राष्ट्रीय एकता और अखंडता से जुड़ा हुआ मामला है। काश्मीर के बगैर भारत की कल्पना नहीं की जा सकती। भारत तभी पूर्ण होता है, जब काश्मीर उसका हिस्सा रहता है। जो ताकतें इस एकता और अखंडता को तोड़ना चाहती हैं, जो इसमें बाधा डालना चाहती हैं, जो अलगाववादी प्रवृत्तियों को बढ़ाना चाहती है, उनसे निपटने के लिए, उनसे लड़ने के लिए हम सबको राजनैतिक मतभेद भुला कर मिल कर काम करना होगा। तभी हम देश की एकता और अखंडता को सुरक्षित रख सकेंगे।

PROF. SAIFUDDIN SOZ (Baramulla) : Mr. Speaker, Sir, when I rise to speak about the developments which the Minister of State's statement says 'recent developments in the Jammu and Kashmir State—and particularly after I heard Mr. Arif Mohammad Khan speaking about the developments there, I was reminded of Faiz Ahmad Faiz's very famous poem which he wrote twenty years before and which was relevant to Pakistan at that time. The text of that po m is relevant to Pakistan even now but unfortunately that poem is relevant to Indian scene also because of the misdeeds of Congress (I) party. Since you do not understand Urdu, I can translate it later. I will recite two verses to Mr. Arif Mohammad Khan's speech has been heart-rending. If Mr. Arun Nehru and Rajiv Gandhi were not to participate in the debate, I would request them not to come to the Sadan because when Arun Nehru comes, those who speak from Cong (I) side feel charged and when Mr. Rajiv Gandhi comes, they feel doubly charged and they all the time play to the gallery. Mr. Arif Mohammad Khan.....

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY SPEAKER : Hon. Members only speak to the House.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Faiz said to Pakistan about thirty years ago.

आरिफ मोहम्मद खां साहब की इस से भरी हुई तकरीर पर और इस लगु पर मैं मजम्मत करता हूं। इस पर दो मिसरे कहने हैं :

निसार मैं तेरी गलियों पै ऐ वतन कि जहां
चली है रस्म कि कोई न सिर उठा कर चले।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : यह फैज साहब ने फौजी शासन के लिए कहा था।

प्रो० सैफुद्दीन सोज : सुनिए मेरी बात। आप ने इस को रेलीवेंट बना दिया है हिन्दुस्तान की सीन पर।

निसार मैं तेरी गलियों पै ऐ वतन कि जहां
चली है रस्म कि कोई न सिर उठा कर चले।
बने हैं अहले हवश मुद्दई भी मुंसिफ भी।
किसे वकील करें किस से मुंसफी चाहें॥

عارف خان صاحب کی اس سے بھری ہوئی تقریر پر اور لغویات پر میں مذمت کرتا ہوں، اس پر مجھے دو مصرعے کہتے ہیں۔

نثار میں تیری گلیوں پہ اے وطن کہ جہاں
چلی ہے رسم کہ کوئی نہ سر اٹھا کے چلے

شری عارف محمد خان : یہ فیض صاحب نے فوجی شاسن کے لئے کہا تھا۔

**Expunged at ordered by the Chair.

پروفیسر سیف الدین سوز : سنیئے میری بات ، آپ نے اس کو ریلیونیٹ بنا دیا ہے ہندستان کی سین پر۔

نثار میں تیری گلیوں پہ اے وطن کہ جہاں
چلی ہے رسم کہ کوئی نہ سر اٹھا کر چلے
بنے ہیں اہل ہوس مدعی بھی منصف بھی
کسے وکیل کریں کس سے منصفی چاہیں

Those people who are in authority are themselves the plaintiff and themselves the judges, wherefrom can you get advocates to plead your case and from whom can you expect justice? This was Faiz Ahmed Faiz speaking about Pakistan. Now, there are some points which are in my mind about developments that have taken place in my State but Mr. Arif Mohammad Khan has brought to your notice certain things which require our explanation. I feel I must initially regret this drama of deceit and untruth......

(*Interruptions*).

He is running away. You ask him to answer some of the points, he cannot go unless he answers my points............

(*Interruptios*).

श्री ग्रारिफ मोहम्मद खां : श्रीमन्, मेरा राज्य सभा में एक बिल है, मैं ग्राप से इजाजत चाहूंगा। मैं भाग नहीं रहा हूं। उस के बाद ग्रा जाऊंगा।

MR. DEPUTY SPEAKER : You are speaking only to get the reply from the Home Minister.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : I know he is a good Minister but he has been given this portfolio very recently. I wonder whether he can rise to the occasion ...

(*Interruptions*).

But he has understood my point. About Arif Mohammad Khan, I do not know what he wants from Congress High Command. I tell you honestly that he is conscious that he was speaking untruth. Don't be under this illusion that he never knew that he was talking untruth and he was misleading the *Sadan* and through this august body he was misleading the entire country. He was cnscious of that but he wants certain things to come to him. I do not know what the Congress High Command can give him. I wish him well if he becomes the Cabinet Minister for these three to four months. He is welcome. You must believe me that I talk to you as a nationalist and I assure you that it is people like Arif Mohammad Khan who are responsible for creating these situations. If he were a Minister in Europe or America, he would have had to tender resignation if he had gone to the President of the country of which he were a Minister because it would mean going to the President of a country over the head of the Prime Minister. There is no record elsewhere to show that in a Parliamentary democracy two Ministers could go to a President in a delegation where there were other Members and make a statement before him. That was patently false and blatently untrue. He has made allegations. and said :

चीफ मिनिस्टर के घर पर नारे लगते थे कि भिडरावाले जिन्दाबाद, खालिस्तान जिन्दाबाद, पाकिस्तान जिन्दाबाद।

چیف منسٹر کے گھر پر نعرے لگتے تھے کہ بھنڈراں والے زندہ باد، خالصتان زندہ باد، پاکستان زندہ باد

I challenge him. If he proves that in Dr. Farooq's home these slogans were ever raised, I will resign from the Parliament as also from National Conference......

(*Interruptions*),

SHRI G.L. DOGRA (Jammu) : That is reported in the papers. That is a fact...

(*Interruptions*)

PROF. SAIFUDDIN SOZ : It is necessary to talk about certain allegations. He has raised certain serious issues. He talked about a newspaper **Al Jehad**. If it were printed and published in Srinagar, he would certainly have given the name of the editor, printer or publisher and established a relationship rather blood relationship, with Dr. Farooq Abdullah. But, unfortunately for the Minister—who, after speaking the untruth in this Sadhan, has left the House, I challenge him, it is published somewhere else in India, may be in Delhi, Bombay or Calcutta.

SHRI RAM JETHMLANI : Not in Bombay.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Then, may be in Delhi. It is certainly a mischievous statement made by the editor if he said muslim must go to Jehad because there was no religion matter involved. Now it is for you to haul up the editor and punish him for that. As far as distribution in Srinagar is concerned, someone on your behalf is trying to create mischief. You must own it. In Srinagar—you have mentioned some dailies ; **Aftab**, **Srinagar Times** and **Nawai Subh**—by and large, the stance of the newspapers is responsible. They cannot publish this trash. If this trash is published here, you have the Ilyasis and other take writers who have never been able to see reason

(Interruptions)

You have produced their statements, the bookletes printed and published by them. This must be a paper which belongs to you. You must investigate it.

It is for the Home Minister to take action under the law of the land. You must take action against the editor, printer and publisher. He would not tell even the name of the paper. Anyway, it does not belong to the National Conference. Surely, he cannot prove that we were distributing that paper. There were some newspapers...*(interruptions)* outside the boundaries of Jammu and Kashmir...

(Interruptions)

He made a statement here, rather he posed a question to me : on the 6th and 7th of June how many houses were burnt ? If he were here, I would have answered him. Now I am answering him through the Home Minister that when the armed action took place in Punjab, there was an outburst in Srinagar, in which the Sikhs came out in the streets, as they did elsewhere in India. That outburst was completely controlled within two and a half hours. Fire was set to two buildings. One was a Nirankari sadhan and the other was an Arya Samaj building. When the mob get jittery and panicky, they can burn any building, be it a bank, Government office or a religious place like Arya Samaj building. Fire was set to only two buildings. The fire extinguishers came, the police came into action, fire was opened and a number of people were killed. This happened within two and a half hours. The Chief Minister, Shri Farooq Abdullah, himself came on the spot and saw to it that the kind of agitation that was launched by the Sikh gentlemen there was controlled. Our few was imposed in that area. Yo must know Shri Arif Mohammed Khan knows—that 11 people were done to death through police firing.

He has said two very objectionable things. He has tried to tell you, to convince you, that a Sadhuji was killed. Can anyone believe it that a Sadhuji could be murdered at the behest of Shri Farooq Abdullah ? Is he a murderer ?

What has happened to you that you have to listen to this trash in this augest body ? I feel ashamed that I have to hear in the Lok Sabha such trash from responsible people on the Treasury Benches...

(Interruptions)

How can you establish it ? I challenge the Home Minister on this.

As I told you, if it is proved that these slogans were raised in Shri Farooq Abdullah's drawing room or bed room, I will resign from the National Con-

ference as also from Parliament. Similarly, if it is proved that a Swamiji was murdered at the behest of somebody in the National Conference, I will resign.

MR. DEPUTY-SPEAKER : How many times will you resign ? You can resign only once.

SHRI R.Y. GHORPADE (Bellary) : What slogans were raised at the cricket match ? You answer that.

श्री कृष्ण दत्त सुलतानपुरी (शिमला) : साधु को आप लोगों के इशारे पर मारा गया होगा ।

प्रो सैफुद्दीन सोज : आरिफ मोहम्मद खां कहते हैं और अपोजीशन के मैम्बर्स से अपील करते हैं-अगर आप श्रीनगर घाटी में जांय तो आप देखेंगे कि डा० फारूख की जमायत ने ने कितने बच्चों को मदरसे जाने से रोका, कितने लोगों के साथ मारपीट की गई, कितनी बहू-बेटियों को सताया गया । मैं आरिफ साहब को कहता हूं-वह अपनी जमायत के दो-तीन लोगों को लें, फारूख अब्दुल्ला को आप ने डिस्मिस किया है, वह अब चीफ मिनिस्टर नहीं है, आप देहातों मे जाइये और देखिये, आप इस के बिलकुल बरेकस कहानी देखियेगा ।

आप ने प्राइम मिनिस्टर को भी मिसलीड किया, जब वह बाहर के दौरे से बम्बई एअरपोर्ट पर आई थीं, तो उन से बयान दिलाया गया कि कांग्रेसियों के घर जलाये जाते हैं, राशन बन्द किया जाता है । मुझे बहुत दुख हुआ कि प्राइम मिनिस्टर से भी **बुलवाया गया और आज भी देख रहा हूं कि आरिफ मोहम्मद खां साहब आप की तरफ बैठ कर** बोल रहे हैं । इस से आप को न कोई फायदा अब तक हुआ है और न आगे होगा ।

**Expunged as ordered by the Chair.

پروفیسر سیف الدین سوز : عارف محمد خان کہتے ہیں اور اپوزیشن کے ممبرس سے اپیل کرتے ہیں۔ اگر آپ سری نگر گھاٹی میں جائیں تو آپ دیکھیں گے کہ ڈاکٹر فاروق کی جماعت نے کتنے لوگوں کو مدرسے جانے سے روکا، کتنے لوگوں کے ساتھ مار پیٹ کی گئی، کتنی بہو بیٹیوں کو ستایا گیا، میں عارف صاحب کو کہتا ہوں وہ اپنی جماعت کے دو۔ تین لوگوں کو لیں، فاروق عبداللہ کو آپ نے ڈسمس کیا ہے، وہ اب چیف منسٹر نہیں ہیں، آپ دیہاتوں میں جایئے اور دیکھئے، آپ اس کے بالکل برعکس کہانی دیکھئے گا۔

آپ نے پرائم منسٹر کو بھی مس لیڈ کیا۔ جب وہ باہر کے دورے سے بمبئی ایرپورٹ پر آئی تھیں تو ان سے بیان دلایا گیا کہ کانگریسیوں کے گھر جلائے جاتے ہیں، راشن بند کیا جاتا ہے، مجھے بہت دکھ ہوا کہ پرائم منسٹر سے بھی غلط بلوایا گیا اور آج بھی دیکھ رہا ہوں کہ عارف محمد خاں صاحب آپ کی طرف بیٹھ کر غلط بول رہے ہیں۔ اس سے آپ کو نہ کوئی فائدہ تب ہوا ہے اور نہ آگے ہوگا۔

SHRI R.Y. GHORPADE : What slogans were raised at the West Indies match ?

PROF. SAIFUDDIN SOZ : You discussed that day for hours together and we have explained our case as to what happened on the day cricket was played in Srinagar. It was in a corner from where some people had raised slogans and the police whisked them away.

SHRI R.Y. GHORPADE : Your Chief Minister was also sitting there.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : At about 4 p.m. it was bad weather. You don't know, but we have explained it already.

[Prof. Saifuddin Soz]

You have further said that they were arrested but released. That is not the case. There is no question of that. They were punished. They were taken to the jail and were identified properly. Father of one of the boys was known to Dr. Farooq Abdullah personally. And when he went to the Chief Minister asking him to release his son, Dr. Farooq refused to do so. He said all those people who had committed this blunder and raised the slogan which are detrimental to the integrity of the nation will have to suffer. So, he was not released. Therefore, whatever Arif Sahib has said, we have already discussed and the chapter is closed. You cannot discuss it again and again about that cricket match. Any match can take place anywhere and any slogan can be raised. But since this slogan was raised in Jammu and Kashmir, you got it handy to whip it up and say that the entire Kashmir valley is infested with anti-national elements. This is not correct.

Anyway, now I would like to come back to the developments that have taken place in the Jammu and Kashmir State. In this connection I want to remind this House once again that when the first result was announced on radio and television Cong I and started feeling shaky and soon after there was announcement regarding the second seat, the Congress (I) party there started talking of rigging. All India Radio and Television bulletins are available with you. The entire record is available with you. You can see whether I am right or wrong. On 5th of June elections were held. Now you can check up the bulletins for 4th, 5th and 6th and you will come to know the reality.

(Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER : Mr. Vyas, please don't interrupt. When he is saying something, you must allow him to say. Please sit down.

(Interruptions)

MR. DEPUTY SPEAKER : Whenever any Member Speaks, you have to get up and get his permission whether he is yielding. You should not behave like this. You are a very senior Member.

PROF. SAIFUDDIN SOZ : No sooner did the annoucement come, than the Congress (I) felt that the National Conference would be the winning party and they started talking of rigging. And when ten results were announced they improved their tempo regarding the rigging. And when the game was up and Dr Farooq came to power with thumping majority, they raised a leve and cry about rigging. It was proper on their part and the peop'e of Kashmir felt as if another country had invaded them.

The Prime Minister herself had made 300 speeches and she moved to every nook and corner of the State. Of course, it was her right; it was not a general election, but anyhow she chose to visit Jammu and Kashmir State and she delivered 300 speeches. Still Dr. Farooq Abdullah came to power and formed the Government. Records are available with you show that from 6th of June right up to the middle of August the Congress (I) Party there either at the behest of the Ruling Party at the Centre or in unisom with it raised the boging of rigging there was a Seminar here in Delhi at which I was invited...

SHRI K.P. UNNIKRISHNAN : It it Seminar on rigging ?

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Yes, the working journalists held a Seminar and Rajendrai Kumari Bajpaiji was representing the Congress (I) and she sprang a surprise on the people by saying that people had voted for Cong. (I).

श्री वी० आर० भगत (सीतामढ़ी) : इलेक्शन कमीशन ने जो जिक्र किया है, वह भी कर दीजिए । इलेक्शन कमीशन ने कहा है कि यह जो इलेक्शन था, फ्री एण्ड फेयर इलेक्शन के स्टैण्डर्ड के काबिल नहीं था ।

SHRI SUNIL MAITRA : Have you heard of 1972 elections in West Bengal ? Keep your mouth shut.

(*Interruptions*)

प्रो० सैफुद्दीन सोज : भगत जी, आप इलेक्शन कमीशन को मानते हैं, तो सारे मामलों में मानना चाहिए। आपने अपने गवर्नर से पहले ही इस चीज का फैसला करवाया। यह तो इलेक्शन कमीशन की मर्जी है। आपने गवर्नर से पहले ही फैसला करवा दिया। आप इलेक्शन की सारी बातों को नहीं मानते हैं। इलेक्शन कमीशन कोई हिदायत देता हैं, तो हम उसे मानेंगे। (**व्यवधान**)

پروفیسر سیف الدین سوز : بھگت جی آپ الیکشن کو مانتے ہیں تو سارے معاملوں میں ماننا چاہیئے۔ آپ نے اپنے گورنر سے پہلے ہی اس چیز کا فیصلہ کرلیا کہ آپ الیکشن کمیشن کی ساری باتوں کو نہیں مانتے ہیں۔ الیکشن کمیشن کوئی ہدایت کرتا ہے تو ہم اسے مانیں گے۔ (انٹرپشنز)

MR. DEPUTY-SPEAKER : You can reply to him when you speak. He is not yielding.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : Mr. Panika, where have you been all the time ? Please sit down.

श्री गिरधारी लाल डोगरा (जम्मू) : हाई कोर्ट में केस गया और फैसला हो गया।

प्रो० सैफुद्दीन सोज : मेरे पास हाई कोर्ट का वरडिक्ट है। आप तो सुप्रीम कोर्ट को भी नहीं मानते हैं और आरिफ मोहम्मद खां तो कानून को मानते ही नहीं हैं।

پروفیسر سیف الدین سوز : میرے پاس ہائی کورٹ کا ورڈکٹ ہے۔ آپ تو سپریم کورٹ کو بھی نہیں مانتے ہیں اور عارف محمد خاں تو قانون کو مانتے ہی نہیں ہیں۔

He has charged him in absence. Rather he was playing with him.

(*Interruptions*)

The Congress (I) Party got agiatated and they used every platform to malign Dr. Farooq Abdullah and talked of rigging and nothing but rigging, and just continued this drama up to the middle of August. I am telling these facts, there is a sort of coherence. I want to tell you what happened on 2nd July 1984.

This was the first phase wnen they said that rigging took place in Jammu and Kashmir and the results of elections should be cancelled, the Government of Jammu and Kashmir should be dismissed. And records are available, you can check up in the newspapers, magazines etc. and the statements made by responsible Congress (I) leaders. Then came the second phase. They found, that the people of India did not accept this theory of rigging and they found, even in the Seminar to which I referred there was a Resolution which said that although certain mal-practices had been committed from both sides, there is no questions of rigging being on a mass scale or being on a scale with could change the composition of the Government. When the Congress (I) Party felt that the people of India have not accepted this theory they came forward and they raised the bogey of violence in Jammu and Kashmir State and record is replete with instances of how Congress (I) workers there set fire to Government buildings, indulged in road blockades and assaulted the personnel responsible for law and order.

We had brought these to your long before that. We gave evidence to you that the drama of violence was very

well planned and through a brochure, which we distributed outside Parliament amongst the journalists and the Members of Parliament, we proved our case before the bar of people that an atmosphere of violence was tried to be created. They tried to create law and order situation. The Government of Jammu and Kashmir dealt with the situation on its own and that romance of agitation in Kashmir ended by the middle of November.

The agitation by Cong. I workers dealt a grievous blow on the tourist industry of Jammu & Kashmir and worst kind of slum was created for that industry. That industry has not recovered up till this date.

That goes to your credit because you created a situation in Jammu & Kashmir State.

After they failed in that phase also.

(Interruptions)

I am telling you things for which I have documentary evidence, After that romance of agitation, then comes the third phase. Roughly it started in the middle of November. They talked about secessionism and terrorism जिसे हिन्दी में कहते हैं कि वहां देशद्रोही पार्टियां हैं।

جسے ہندی میں کہتے ہیں کہ وہاں دیش دروہی پارٹیاں ہیں۔

All of a sudden they came forward talking about Jamait-ul Islamia, Jamait-ul Tulba and Maulvi Farooq. I must tell you that Jamait-ul-Islami is a basically religiuus body. But they were baptized by the Congress into politics.

(Interruptions)

17.57 hrs.

[MR. SPEAKER in the Chair]

(Interruptions)

आरिफ साहब ने अखबारों की बात कही स्पीकर साहब में आपको बताना चाहता हूं। जम्मू-कश्मीर में सेसेसनिस्ट्रस की बात कही गई, जमायते इस्लामी, जमायते तुलबा की बात कही गई, मौलवी फारूख की बात की गई। जमायते इस्लामी को वहां कौन लाया था? वह कांग्रेस पार्टी लाई थी। जब मीर कासिम वहां के चीफ मिनिस्टर थे और वहां इलेक्शन आ गये थे तो उस वक्त इलेक्शन में जमायते इस्लामी को पांच सीटें असेम्बली में मिली थीं। वे कांग्रेस की शह पर मैदान में आई थी। जब शेख साहब वहां के चीफ मिनिस्टर हो गये और 1977 के इलेक्शन हुए तो जमायते इस्लामी को एक ही सीट मिली। उसके बाद जब डा० फारूख अब्दुल्ला वहां के चीफ मिनिस्टर हो गए और इलेक्शन हुए तो उनके हाथ से वह एक सीट भी चली गई।

عارف صاحب نے اخباروں کی بات کہی۔ اسپیکر صاحب میں آپ کو بتانا چاہتا ہوں، جموں کشمیر میں سیسس نیشیٹ کی بات کہی گئی، جماعت اسلامی، جماعت طلباء کی بات کہی گئی ہے مولوی فاروق کی بات کہی گئی، جماعت اسلامی کو وہاں کون لایا تھا، وہ کانگریس پارٹی لائی تھی، جب میر قاسم وہاں کے چیف منسٹر تھے اور وہاں الیکشن آگئے تھے تو اس وقت الیکشن میں جماعت اسلامی کو پانچ سیٹیں اسمبلی میں ملی تھیں، وہ کانگریس کی شہہ پر میدان میں آئی تھی، جب شیخ صاحب وہاں کے چیف منسٹر ہوگئے اور ۱۹۷۷ کے الیکشن ہوئے تو جماعت اسلامی کو ایک ہی سیٹ ملی، اس کے بعد جب ڈاکٹر فاروق عبداللہ وہاں کے چیف منسٹر ہوگئے اور الیکشن ہوئے تو ان کے ہاتھ سے وہ ایک سیٹ بھی چلی گئی۔

I was fighting from Baramula Parliamentary constituency. I must tell you that your party i.e. Congress (I) Party in the State helped by people like Shri Arif Mohammad Khan who had come in that Yalgar to Srinagar supported Jamat-e-Islami against National Conference.

SHRI BUTA SINGH : This is unparliamentary.

(Interruptions)

PROF. SAIFUDDIN SOZ : You never heard Shri Arif Mohammad Khan.

SHRI BUTA SINGH : I heard most of the people speaking. I heard your Maulvi Speaking. What he was speaking was not less than Yalgar.

प्रो० सैफुद्दीन सोज : सरदार साहब इतनी देर कर के क्यों आते हैं, थोड़ी देर पहले आ जाते। अब सरदार साहब भी आ गये हैं, स्पीकर साहब भी आ गये हैं।

پروفیسر سیف الدین سوز : سردار صاحب اتنی دیر کر کے کیوں آتے ہیں۔ تھوڑی دیر پہلے آجاتے۔ اب سردار صاحب بھی آگئے ہیں۔ اسپیکر صاحب بھی آگئے ہیں۔

SHRI BUTA SINGH : I was here. My coming can be unfortunate. But how can Speakers coming be unfortunate ?

अध्यक्ष महोदय : सोज साहब आप कहते हैं तो मैं चला जाता हूं।

आचार्य भगवान देव : आपके आने से ये परेशान क्यों हो गये ?

MR. SPEAKER : It is six O'Clock. I think you may speak to-morrow.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, SPORTS AND WORKS AND HOUSING (SHRI BUTA SINGH) : Sir, I have to made a request.

This morning you had asked us to make a statement. We are getting the facts. As soon as we are prepared with the facts, we will come to the House.

(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, सुबह वादा किया गया था कि आज बयान दिया जाएगा।

अध्यक्ष महोदय : उसी के बारे में तो बताया है।

PROF. MADHU DANDAVATE (Rajapur) : Where are all those persons who were demanding the statement ?

MR. SPEAKER : The House stands adjourned to re-assemble tomorrow at 11.00 a.m.

18.01 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Tuesday, July 31, 1984/Sravana 9, 1906 (Saka)

Sunlight Printers, Delhi-110006 Ph. : 23 33 63